रजिस्ट्री सं० डी-(डी)—73

REGISTERED No.D(D)-73

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 4] नई दिल्ली, शनिवार, जनवरी 24, 1976 (माघ 4, 1897)

No. 4] NEW DELHI, SATURDAY, JANUARY 24, 1976 (MAGHA 4, 1897)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

नोटिस
NOTICE

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 31 दिसम्बर 1975 तक प्रकाशित किए गए हैं:—

The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published up to the 31st December 1975 :—

अंक Issue No.	संख्या और तिथि No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject
247.	सं० 131-आई० टी० सी० (पी० एन०)/75, दिनांक 19 दिसम्बर, 1975	वाणिज्य मंत्रालय	अप्रैल, 1975—मार्च, 1976 अवधि के लिये पंजीकृत निर्यातकों के लिए आयात नीति (संशोधन)।
	No. 131-ITC (PN)/75, dated the 19th December 1975	Ministry of Commerce	Import Policy for Registered Exporters for the period April 1974—March 1976 (Amendment).
248.	सं० प्रतिअदायगी /पी० एन० 92/75- दिनांक 19 दिसम्बर, 1975	वित्त मंत्रालय	सार्वजनिक सूचना प्रति अदायगी/ पी० एन०-1, दिनांक 15 अक्तूबर, 1971 में प्रकाशित सारणी में संशोधन।
	No. Drawback/PN-92/75, dated the 19th December, 1975	Ministry of Finance	Amendments in the Tables published in the Public Notice No. Drawback/PN-1, dated the 15th October, 1971.
249.	सं० प्रति अदायगी/सा० सू०-93/75, दिनांक 22 दिसम्बर, 1975	वित्त मंत्रालय	सार्वजनिक सूचना सं० 53/75 में संशोधन।
	No. Drawback/PN-93/75, dated the 22nd December, 1975.	Ministry of Finance	Corrections to Public Notice No. 53/75.
250.	सं० 52-ई० टी० सी० (पी० एन०)/75, दिनांक 22 दिसम्बर, 1975	वाणिज्य मंत्रालय	गैर उगाही वाली, एल्युमिनियम धातु अनगढ़ (सिल्लियों) का निर्यात।
	No. 52-ETC (PN)/75, dated the 22nd December, 1975.	Ministry of Commerce	Export of Non-levy Aluminium Metal unwrought (ingots).

अंक Issue No.	संख्या और तिथि No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject
251.	सं० 53-ई० टी० सी० (पी० एन०)/75, दिनांक 27 दिसम्बर, 1975	वाणिज्य मंत्रालय	राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ लि०, नई दिल्ली के माध्यम से आलु के निर्यात की सरणीबद्ध करना।
	No. 53-ETC (PN)/75, dated the 27th December, 1975.	Ministry of Commerce	Canalisation of Export of Potatoes through National Agricultural Co-operative Marketing Federation Ltd., New Delhi.
252.	सं० 54-ई० टी० सी० (पी० एन०)/75, दिनांक 27 दिसम्बर 1975	वाणिज्य मंत्रालय	नाइलान टायर कार्ड का निर्यात।
	No. 54-ETC (PN)/75, dated the 27th December, 1975.	Ministry of Commerce	Export of Nylon Tyre Cord.
253.	सं० 132-आई० टी० सी० (पी० एन०)/75, दिनांक 27 दिसम्बर, 1975	वाणिज्य मंत्रालय	यु० के० /भारत मिश्रित परियोजना अनुदान 1975 के अन्तर्गत यु० के० से आयातों के लिए लाइसेंस शर्तें।
	No. 132-ITC (PN)/75, dated the 27th December, 1975.	Ministry of Commerce	Licensing conditions for imports from U. K. under U. K./India Mixed Project Grant, 1975.
254.	सं० 133-आई० टी० सी० (पी० एन०)/75, दिनांक 29 दिसम्बर, 1975	वाणिज्य मंत्रालय	ई० सी० ग्रेड ऐल्युमीनियम का आयात।
	No. 133-ITC (PN)/75, dated the 29th December, 1975.	Ministry of Commerce	Import of E. C. Grade Aluminium.
255.	सं० प्रति अदायगी/सा० सू० -94/75, दिनांक 31 दिसम्बर, 1975	वित्त मंत्रालय	सार्वजनिक सूचना सं० प्रति अदायगी /पी० एन०-1, दिनांक 15 अक्तूबर, 1971 में प्रकाशित सारणी में संशोधन।
	No. Drawback/PN-94/75, dated the 31st December, 1975.	Ministry of Finance	Amendments in the Table published in the Public Notice No. Drawback/PN-1 dated the 15th October, 1971.
	सं० प्रति अदायगी/सा० सू० -95/75, दिनांक 31 दिसम्बर, 1975	वित्त मंत्रालय	सार्वजनिक सूचना सं० प्रति अदायगी/ पी० एन०-1, दिनांक 15 अक्तूबर, 1971 में प्रकाशित सारणी संशोधन।
	No. Drawback/PN-95/75, dated the 31st December, 1975.	Ministry of Finance	Amendments in the Table published in the Public Notice No. Drawback/PN-1, dated 15th October, 1971.
	सं० प्रति अदायगी/ पी० एन०-96/75, दिनांक 31 दिसम्बर, 1975	वित्त मंत्रालय	सार्वजनिक सूचना सं० प्रति अदायगी/ पी० एन०-1, दिनांक 15 अक्तूबर, 1971 में प्रकाशित सारणी में संशोधन।
	No. Drawback/PN-96/75 dated the 31st December, 1975.	Ministry of Finance	Amendments in the Table published in the Public Notice No. Drawback/PN-1, dated 15th October, 1971.

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां, प्रकाशन नियन्त्रक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांग-पत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी। मांग पत्र नियन्त्रक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तिथि से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिएं।

Copies of the *Gazettes Extraordinary* mentioned above will be supplied on indent to the Controller of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Controller within ten days of the date of issue of these Gazettes.

विषय-सूची

भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं . . 51

भाग I—खंड 2 (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं . 121

भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं . 1

भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि सेसम्बन्धित अधिसूचनाएं . 77

भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम . . . —

भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्टें . . —

भाग II—खंड 3—उपखंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारियों द्वारा जारी जारी किये गये साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं) . . 185

भाग II—खंड 3—उपखंड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारीयों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं . . 335

भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा प्रधिसूचित विधिक नियम और आदेश 7

भाग III—खंड 1—महालेखा परीक्षक, संघ लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के अधीन तथा संलग्न कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं 426

भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिस 73

भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं 5

भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विधिक अधिसूचनाएं जिनमें अधि-सूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं . . . 891

भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिस 13

CONTENTS

PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court 51

PART I—SECTION 2.—Notification ragarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court 121

PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence 1

PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Officers issued by the Ministry of Defence 77

PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations .. .. —

PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills .. .. .. —

PART II—SECTION 3.—SUB. SEC. (i).—General Statutory Rules (including orders, bye-laws etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) .. PAGE 185

PART II—SECTION 3.—SUB. SEC. (ii).—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) .. 335

PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence .. 7

PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India .. 426

PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Office, Calcutta .. 73

PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners 5

PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies 891

PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies 13

भाग I—खंड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1975

सं० 4-प्रेज/76—राष्ट्रपति निम्नांकित कार्मिकों को उनकी असाधारण कर्त्तव्यपरायणता एवं साहस के लिए "नौसेना मडल" /"नैवी मैडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं:—

1. कमांडर सतपाल सिंह ढिंडसा (00308-जैड) भारतीय नौसेना।

पोर्ट ब्लेयर में आग लगने की सूचना मिलने पर कमांडर सत पाल सिंह ढिंडसा ने पोर्ट ब्लेयर में स्थित सेना की सभी यूनिटों को इकट्ठा किया और नौसेना के कार्मिकों को आग बुझाने के लिए तैयार किया। घटनास्थल पर इन्होंने सब नौ-सैनिकों और थल सैनिकों के प्रयत्नों में तालमेल बनाया और किसी प्रकार का आतंक नहीं फैलने दिया। इन्होंने पानी फैंकने वाली गाड़ियों का संचालन और नियंत्रण करने में पहल की और पानी की नियमित व्यवस्था की। कमांडर ढिंडसा द्वारा समय पर की गई कार्रवाई से आग पर शीघ्र काबू पाने में काफी मदद मिली।

इस कार्रवाई में कमांडर सत पाल सिंह ढिंडसा ने, नौसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप असाधारण सूझबूझ और व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया।

2. लैफ्टिनेन्ट कमांडर सुब्रामोनिआ गोपालकृष्णन् (00426-टी) भारतीय नौसेना।

लैफ्टिनेन्ट कमांडर सुब्रामोनिआ गोपालकृष्णन् को 13 अक्तूबर, 1959 को भारतीय नौसेना में कमीशन प्रदान किया गया और जून, 1963 को उन्होंने बेड़ा वायु सेनांग में प्रेक्षक के रूप में अर्हता प्राप्त की। उन्होंने विभिन्न उड्डयन यूनिटों में बड़ी कुशलता से काम किया, जिनमें फिक्सड विंग एलीजे स्क्वाड्रन तथा सीकिंग हैलीकोप्टर स्क्वाड्रन शामिल है। उन्होंने 1300 घंटों से अधिक की उड़ानें की हैं। एलीजे में दो वर्ष के अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने अकेले 584 घंटों की उड़ानें कीं। वे उन कुछ प्रेक्षकों में से थे, जिन्हें 1971 में इंगलैंड की रायल नैवी में सीकिंग पर उड़ानें भरने के प्रशिक्षण के लिए विशेष रूप से चुना गया था। उन्होंने वहां पर अपना प्रशिक्षण भूमि तथा वायु दोनों में ही उच्च स्तरीय और संतोषजनक ढंग से पूर्ण किया और हवाई पनडुब्बी रोधी सामरिकी तथा प्रचालन प्रक्रियाओं के बारे में पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया, जिसका प्रयोग उन्होंने 1971 के भारत-पाक संघर्ष के दौरान अनेक बार सीकिंग पर सांक्रियात्मक उड़ानों के दौरान किया।

लैफ्टिनेन्ट कमांडर सुब्रामोनिआ गोपालकृष्णन् ने इस प्रकार नौसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप व्यावसायिक कुशलता और असाधारण कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

3. लैफ्टिनेन्ट कमांडर अमरजीत सिंह रावत (00473-जैड), भारतीय नौसेना।

लैफ्टिनेन्ट कमांडर अमरजीत सिंह रावत एक उच्चकोटि के अर्हता प्राप्त उड़ान शिक्षक हैं और सीकिंग पर मास्टर ग्रीन इन्स्ट्रुमेंट रेटिंग धारक हैं। स्क्वाड्रन उड़ान शिक्षक के रूप में इन्होंने अप्रैल, 1971 से दिसम्बर, 1971 तक 311 घंटों की उड़ानें कीं जो कि एक महत्वपूर्ण कार्य है। सीकिंग हेलीकोप्टर पर आने के बाद इन्हें हेलीकोप्टर पर नियमित परिवर्तन पाठ्य-क्रम के लिए इन्हें ब्रिटेन भेजा गया और वह इन्होंने असाधारण कुशलता से पूर्ण किया। अगले पाठ्यक्रम के लिए इन्हें प्रशिक्षक के रूप में चुना गया। इनकी व्यावसायिक योग्यता और ज्ञान ने ब्रिटेन में भारतीय नौसेना के सम्मान की अभिवृद्धि की। इन्हें एक नेवल एयर स्कवाड्रन के वरिष्ठ पायलट के रूप में नियुक्त किया गया, वहां इन्होंने दो वर्षों में 586 घंटे की उड़ाने कीं। इन्होंने अब तक कुल 2460 घंटों की उड़ानें भरी हैं।

लैफ्टिनेन्ट कमांडर अमरजीत सिंह रावत ने इस प्रकार नौसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप व्यावसायिक कुशलता तथा असाधारण कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

4. लैफ्टिनेन्ट कमांडर इमेनुअल डिएनी चौहान (00480-आर),
भारतीय नौसेना।

लैफ्टिनेन्ट कमांडर इमेनुअल डिएनी चौहान को मई, 1961 में कमीशन प्रदान किया गया था और अक्तूबर, 1966 में इन्होंने प्रेक्षक के रूप में अर्हता प्राप्त की। यह एक उच्चकोटि के विमानक हैं और नौसेना के हवाई सेनांग के वरिष्ठतम 'क्यू० एन० आई०' हैं। इन्होंने 1500 घंटे की उड़ानें की हैं। इन्हें सीकिंग हैलीकोप्टरों से उड़ान करने के प्रशिक्षण के लिए ब्रिटेन भेजा गया था। वहां इनका काम अति प्रशंसनीय रहा और इन्होंने वहां प्रथम स्थान प्राप्त किया। अपने व्यावसायिक ज्ञान और कर्त्तव्यपरायण के द्वारा इन्होंने अनेक प्रेक्षकों को सीकिंग पर उड़ान भरने का प्रशिक्षण दिया। नौसेना के हवाई सेनांग में प्रयोग में आने वाले सिद्धांतों के बनाने म इनका निकटतम संबंध रहा है। 1974 में उन्हें पुनः ब्रिटेन में सीकिंग की उड़ानों में भाग लेने के लिए भेजा गया था। इन्होंने यह कार्य प्रशंसनीय व्यावसायिक योग्यता के साथ पूरा किया।

लैफ्टिनेन्ट कमांडर इमेनुअल डिएनी चौहान ने इस प्रकार नौसेना की उच्चतम पराम्पराओं के अनुरूप व्यावसायिक क्षमता और असाधारण कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

5. लैफ्टिनेन्ट कमांडर (एक्स) (पी) फ्रैंक रिचर्ड क्लार्क
(00544-के),
भारतीय नौसेना।

लैफ्टिनेन्ट कमांडर फ्रैंक रिचर्ड क्लार्क को 1 जुलाई, 1964 को कमीशन प्रदान किया गया था। मार्च, 1966 म इन्होंने पायलट के रूप में अर्हता प्राप्त की और एलीजे में यह एक वरिष्ठ पायलट सिद्ध हुए हैं। यह एक अर्हता-प्राप्त उड़ान शिक्षक और इन्स्ट्रूमेंट रेटिंग शिक्षक हैं और वह मास्टर ग्रीन इन्स्ट्रूमेंट रेटिंग के धारक हैं। इन्होंने लगभग 1800 घंटों की उड़ानें की हैं जिनमें 143 दिन और 16 रात की विक्रान्त के डैक पर उतरने की हैं। इन्होंने जुलाई, 1968 से जलाई, 1970 के दौरान 5/42 घंटों से अधिक की उड़ाने कीं। 1971 नें भारत पाकिस्तान संघर्ष के दौरान यह पहले पायलट थे जिन्होंने विक्रान्त से कौक्स बाजार पर बमबारी की तथा पूर्वी सैक्टर में एक वाणिज्य जलयान पर बमबारी करके उसे डुबो दिया और जिससे शत्रु की महत्वपूर्ण संचार व्यवस्था अवरुद्ध हो गई।

लैफ्टिनेंट कमांडर फ्रैंक रिजर्ड क्लार्क ने, इस प्रकार नौसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप उच्चकोटि की व्यावसायिक क्षमता और असाधारण कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

6. लैफ्टिनन्ट विद्यासागर मल्होत्रा (00608-एफ),
भारतीय नौसेना।

लैफ्टिनेन्ट विद्यासागर मल्होत्रा जुलाई, 1969 में हैलीकोप्टर के बेड़े में शामिल हुए और तदुपरान्त इन्होंने हैलीकोप्टर स्क्वाड्रन में कई उड़ानें कीं। फिर उन्हें रायल नैवी के साथ सीकिंग की उड़ानों के प्रशिक्षण के लिए चुना गया। उन्होंने दिसम्बर, 1971 में सीकिंग स्क्वाड्रन में सक्रिय सेवा की और दिन तथा रात्रि के समय अनेक संक्रियात्मक उड़ानें कीं। संक्रियाओं के दौरान उन्होंने बड़े प्रशंसनीय तथा निष्ठावान ढंग से कार्य किया। 1972 में उन्हें वायुसेना में प्रशिक्षण प्राप्त कर लेने के बाद हलीकोप्टर प्रशिक्षण स्कूल में उड़ान शिक्षक के रूप में नियुक्त किया गया। एक वर्ष की अल्प अवधि में ही उन्होंने 300 घंटों से अधिक की उड़ान कीं।

लैफ्टिनेन्ट विद्यासागर मल्होत्रा ने इस प्रकार नौसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप व्यावसायिक दक्षता और असाधारण कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

7. लैफ्टिनेन्ट (एस डी ए वी) उन्नीकृष्णन् नायर
(84567-वाई),
भारतीय नौसेना।

लैफ्टिनन्ट उन्नीकृष्णन् नायर को 2 अप्रैल, 1962 को वैमानिक शाखा के हवाई कर्मी संवर्ग के लिए चुना गया था। वे हवाई कर्मी पाठ्यक्रम म प्रथम आए और अगले उड़ान प्रशिक्षण के लिए नौसेना वायु स्क्वाड्रन में सम्मिलित हुए। उन्हें 30 सितम्बर, 1967 को कमीशन प्रदान किया गया। 1965 के भारत-पाकिस्तान संघर्ष के दौरान वह एलीजे कार्मिक के रूप में अग्रिम बेस से कार्रवाई करने के लिए विशष रूप से चुने गए। उन्होंन विभिन्न प्रकार के नौसेनिक वायुयानों पर कुल मिलाकर 897.55 घंटों की उड़ानें भरी हैं।

लैफ्टिनेन्ट उन्नीकृष्णन् नायर ने इस प्रकार नौसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप व्यावसायिक दक्षता और असाधारण कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

8. 86444 एन्थौनी पनक्कल कुरियाकोज,
मेकैनीशियन इंजन रूम आर्टिफिसर II
भारतीय नौसेना।

एन्थौनी पनक्कल कुरियाकोज एक पनडुब्बी में चीफ इंजन रूम आर्टिफिसर थे। इन्होंने भारी संख्या में पनडुब्बी कार्मिकों को प्रशिक्षण किया। जब इनकी पनडुब्बी अत्यन्त खराब मौसम में काम कर रही थी, तब इन्होंने अकेले ही एक महत्वपूर्ण उपस्कर की सफलता पूर्वक मरम्मत की जिससे इनकी पनडुब्बी अपने निर्धारित कार्य को पूरा कर सकी थी। एक अन्य अवसर पर इन्होंने अपनी व्यक्तिगत सुख-सुविधा का ध्यान किए बिना लगातार 48 घंटे से अधिक कार्य करके एक महत्वपूर्ण उपस्कर को परिचालन योग्य बना दिया था।

मेकैनीशियन इंजन रूम आर्टिफिसर, एन्थौनी पनक्कल कुरियाकोज ने नौसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप व्यावसायिक क्षमता और असाधारण कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

9. 52869 पार्थसारथी रामदुराय,
इंजन रूम आर्टिफिसर III
भारतीय नौसेना।

पार्थसारथी रामदुराय, इंजन रूम आर्टिफिसर III एक नौसेना पोत के चीफ इंजन रूम में आर्टिफिसर थे। इनकी कर्त्तव्यनिष्ठा और व्यावसायिक कुशलता के कारण ही पोत को प्रणोदन और सहायक मशीनरी को काम करने की उत्तम संक्रिय हालत में बनाए रखा जा सका। दो भिन्न अवसरों पर, अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना इन्होंने अपने पोत पर लगी आग को काबू में किया। अप्रैल, 1974 में इनके पोत को एक विशेष कार्यभार सौंपा गया था। समुद्र में तूफान के होते हुए अत्यन्त कठिन प्रचालन परिस्थितियों में इन्होंने कार्य को समय में पूरा कर दिखाया।

इंजन रूम आर्टिफिसर, पार्थसारथी रामदुराय ने इस प्रकार नौसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप व्यावसायिक क्षमता और असाधारण कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

10. 52783 बृज मोहन शर्मा,
इंजन रूम आर्टिफिसर III
भारतीय नौसेना।

10 जून, 1974 को जब बृज मोहन शर्मा, इंजन रूम आर्टिफिसर, एक नौसेना पोत के पोर्ट बायलर रूम में कार्य कर रहे थे, एक विस्फोट सुनाई पड़ा और भाप तेजी के साथ निकलती दिखाई दी जिससे सम्पूर्ण बायलर रूम बड़ी तेजी से भर रहा था। जब कुछ समय बाद शोर कम हुआ तब पता चला कि एक ड्रेन काक होल प्लग एक सहायक भाप पाइप से उड़ गया है। बायलर रूम में कार्मिकों के जीवन को खतरे में पड़ा देख बृज मोहन शर्मा ने, जो पोर्ट लैडर के सबसे निकट थे, अपने जीवन को जोखिम में डालते हुए भाप में से गुजर कर सहायक स्टाप वाल्व की ओर की तीव्रता से भागे और बायलर के ऊपर के वाल्स को बन्द कर दिया और भाप को पुनः नियंत्रण में ले आए।

इस कार्यवाही में इंजन रूम आर्टिफिसर, बृज मोहन शर्मा ने नौसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप अनुकरणीय साहस, व्यावसायिक दक्षता और असाधारण कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

11. 48304 गुरचरन सिंह ढिल्लो,
रेंगुलेटिंग पैटी अफसर,
भारतीय नौसेना।

22 जनवरी, 1974 को पोर्ट ब्लेयर में आग लग गई जिससे वहां की प्रमुख मंडी, एवरडीन बाजार को भारी क्षति पहुंची। आग के खतरे का संकेत पाते ही रैंगुलेटिंग पैटी अफसर गुरचरण सिंह ढिल्लों, नौसेना कार्यालय में गए और आग बुझाने वाले पहले दल के साथ जाने के लिए अपने आप को प्रस्तुत किया। घटनास्थल पर पहुंच कर इन्हें इमारत के एक भाग को गिराने का कार्य सौंपा गया, ताकि आग को फैलने से रोका जा सके। इनकी सहायता के लिए थोड़े ही नौसैनिक थे, और इनके पास केवल कामचलाऊ उपस्कर ही था। फिर भी, इन्होंने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना थोड़े ही समय में कार्य पूरा कर दिखाया और इस तरह आग पर शीघ्र नियंत्रण पाने में सहायता की

इस कार्रवाई में रैंगुलेटिंग पैटी अफसर गुरचरन सिंह ढिल्लों ने नौसेना को उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप बड़े साहस और असाधारण कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

12. 66819 दलीप सिंह तथा,
पैटी अफसर,
भारतीय नौसेना।

22 जनवरी, 1974 को पोर्ट ब्लेयर में आग लग गई जिससे एवरडीन बाजार को भारी क्षति पहुंची। आग का अलार्म सुनकर पेटी अफसर दलीप सिंह चत्था ने जो नौसेना कार्यालय में पहुंचने वाले प्रथम व्यक्तियों में से थे अपने आप को आग बुझाने वाले प्रथम दल के साथ जाने के लिए प्रस्तुत किया। घटनास्थल के निकट ही एक दुकान में भारी संख्या में पेन्ट के ड्रम रखे हुए थे जिनमें तुरन्त आग लगने का खतरा था। पैटी अफसर दलीप सिंह चत्था ने इस खतरे को देखकर अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना दुकान में ड्रमों को हटवा दिया और इस प्रकार आग को फैलने से रोक दिया।

इस कार्यवाही में, पैटी अफसर दलीप सिंह चत्था ने, नौसेना को उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप साहस और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

सं० 5-प्रेज/76—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को उनकी असाधारण कर्तव्यपरायणता और साहस के लिए "सेना मैडल"/"आर्मी मैडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. मेजर यशपाल (आई० सी० 14821),
सिख रैजिमैण्ट ।

मेजर यशपाल नागालैण्ड में तैनात एक इन्फैन्ट्री बटालियन की एक कम्पनी के कमांडिंग अफसर थे। इन्हें एक विरोधी को पकड़ने का काम सौंपा गया था जो उसी क्षेत्र में ठहरा हुआ था। इन्होंने छुपाव-स्थान के क्षेत्र का प्रेक्षण करके अपनी कम्पनी को तीन धावा दलों म बांटा और छः पड़ाव डालने की योजना बनायी। ये आशंका होने पर कि विरोधी को इनकी इस कार्रवाई का पता लग गया है मेजर यशपाल ने निर्धारित समय से पहले ही हमला करने का फैसला किया। धावा-दल की तीनों टुकड़ियां आगे बढ़ीं और उन्होंने एक गहरे नाले के पार विरोधियों का छुपाव-स्थान देख लिया। जब धावा दल की एक टुकड़ी नाला पार कर रही थी तो अचानक तीन विरोधी झोंपड़ी से बाहर निकल कर भागे। बायी ओर के सैनिकों ने भागते हुए विरोधियों पर गोली चलायी। उनमें से एक विरोधी, जो घायल हो गया था, बच निकलने के विचार से नाले में कूद पड़ा। मेजर यशपाल एक अन्य जवान के साथ, उस विरोधी पर टूट पड़े और उसे वहीं मार डाला। अन्य विरोधियों को खदेड़ दिया गया।

इस कार्रवाई में मेजर यशपाल ने, थल सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप साहस और असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. मेजर परमानन्द शर्मा (आई० सी०-20654),
इंजीनियर्स ।

मेजर परमानन्द शर्मा को इंजीनियर रैजिमैण्ट के एक कृतिक दल के अफसर-इंचार्ज के रूप में काम करते हुए, एक बहुत ही महत्वपूर्ण काम सौंपा गया। उन्होंने कृतिक दल का नेतृत्व करते हुए बड़े उत्साह, तत्परता एवं धैर्य के साथ काम किया। अपने सतत कठिन परिश्रम और दृढ़-संकल्प से उन्होंने इस काम को निर्धारित समय से पहले ही पूरा कर दिया।

इस प्रकार मेजर परमानन्द शर्मा ने, थल सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप साहस और असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

3. कैप्टन अरुण कुमार छेत्री (आई० सी०-26333),
गोरखा राइफल्स ।

18 जुलाई, 1974 को कैप्टन अरुण कुमार छेत्री को गोरखा राइफल्स की राइफल कम्पनी का कार्यभार सौंपा गया और उन्हें विरोधियों के शिविर का पता लगाकर उस पर धावा बोलने का आदेश दिया गया। उन्होंने कम्पनी को तीन टुकड़ियों में बांटा और एक टुकड़ी का नेतृत्व स्वयं संभाला। कुछ झोंपड़ियों की तलाशी के बाद उन्होंने एक विरोधी नेता को पकड़ लिया जिसने, पूछताछ किये जाने पर शिविर की स्थिति बता दी। अपनी बाकी कम्पनी के इकट्ठा होने की प्रतीक्षा किये बिना वे, केवल दो अनुभागों के साथ संदिग्ध क्षेत्र की ओर बढ़ गए। खराब मौसम और कम दिखाई देने के कारण यह काम बड़ा जोखिम भरा हो गया था। 200 गज के फासले से भी विरोधियों का शिविर दिखायी नहीं देता था। उसी समय विरोधियों ने एकाएक गोली-बारी शुरू कर दी। एक सैनिक टुकड़ी अपनी बन्दुकों से गोली चलाते हुए आगे बढ़ी। उधर कैप्टेन छेत्री और उनके अनुभाग ने एक पड़ाव-दल बना लिया ताकि विरोधी बच कर न निकल सकें। इन्होंने भागते हुए एक व्यक्ति पर गोली चला दी जिससे अन्य विरोधियों का हौंसला टूट गया और उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया। अन्ततः सभी विरोधी हथियारों, गोलाबारूद तथा बहु-मूल्य दस्तावेजों सहित जीवित पकड़ लिये गये।

इस कार्रवाई में कैप्टन अरुण कुमार छेत्री ने, थल सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप साहस और असाधारण कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

4. श्री मोहिन्द्र कुमार सिंघा,
सहायक कमांडेंट,
असम राइफल्स ।

सहायक कमांडेंट मोहिन्द्र कुमार सिंघा जुलाई, 1972 से, चम्पई में, असम राइफल्स की एक बटालियन के "सी" स्कंध की कमान कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने उच्चकोटि की कर्तव्य-परायणता, परिश्रमशीलता, धैर्य तथा स्थानीय लोगों के साथ व्यवहार में बड़ी सूझबूझ का परिचय दिया। उन्होंने लोगों का विश्वास प्राप्त कर लिया और अनेक कार्रवाइयों का आयोजन करके अपनी कमान के अधीन आने वाले क्षेत्र पर पूरी तरह नियन्त्रण पा लिया। 16 अप्रैल, 1974 को, केवल चार व्यक्तियों को लेकर उन्होंने बड़ी साहसपूर्ण और तुरन्त कार्रवाई करके एक स्टेन मशीन कारबाइन और एक ब्रेटा गन पकड़ ली। 14 मई, 1974 को

उन्होंने एक अन्य कार्रवाई में 303 की दो राइफलें तथा चिलों और दस्तावेजों सहित काफी मात्रा में गोलाबारूद पकड़ा।

सहायक कमांडेंट मोहिन्द्र कुमार सिंघा ने नितान्त साहस और असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

5. श्री उत्तम पडेरा,
सहायक कमांडेंट,
असम राइफल्स।

नागालैण्ड के मोकोक चुंग जिले में संक्रियाओं के दौरान सहायक कमांडेंट उत्तम पडेरा असम राइफल्स के एक कालम की कमान कर रहे थे। जिसे विरोधियों के शिविर का पता लगाकर उसे नष्ट करने का काम सौंपा गया था। वे एक जूनियर कमीशण्ड अफसर तथा 35 जवानों को लेकर, 31 अगस्त, 1973 को संकिया क्षेत्र में पहुंचे। उन्होंने अपने दल को तीन टुकड़ियों में बांटा ताकि तीन ओर से खोज के लिए बढ़ा जा सके और इनमें से एक टुकड़ी अपनी कमान में रखी। विभिन्न खेती झोंपड़ियों तथा आसपास की पहाड़ियों की खोज करते हुए उन्होंने एक खेती झोंपड़ी में दो व्यक्तियों को देखा। ललकारे जाने पर, उनमें से एक ने कूद कर निकल भागने की कोशिश की। उन्होंने उस विरोधी का पीछा किया और एक जवान को गोली चलाने का आदेश दिया। इसका प्रतिरोधक प्रभाव पड़ा और विरोधी ने आत्मसमर्पण कर दिया। पूछताछ करने पर, विरोधी अंततः दल को विरोधियों के दो छुपाव-स्थानों पर ले जाने के लिये तैयार हो गया। इसके परिणाम-स्वरूप, भूमिगत विरोधियों की व्यवस्था के कुछ महत्वपूर्ण व्यक्ति, हथियारों, गोलाबारूद तथा बहुमूल्य दस्तावेजों सहित पकड़ लिये गये।

इस कार्रवाई में सहायक कमांडेंट उत्तम पडेरा ने अनुकरणीय साहस तथा असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया

6. जे० सी० 30479, सूबेदार धर्मपाल,
राजपूताना राइफल्स।

15 अगस्त, 1973 को विरोधियों के एक गिरोह की गति-विधि के बारे में सूचना मिलने पर, सूबेदार धर्मपाल को, विरोरिधयों को पकड़ने के लिए एक दल के नेतृत्व का भार सौंपा गया। घने जंगल में से छः घण्टे पैदल चलकर, यह दल उस स्थान पर पहुंचा जहां से विरोधियों के नदी पार करने की संभावना थी। ये लोग एक दिन तक घात लगाकर बैठे रहे, लेकिन इन्हें विरोधियों का गिरोह दिखाई नहीं दिया। अगले दिन इन्हें सूचना मिली कि विरोधी दल ने नदी किसी और स्थान से पार कर ली है और अब वह एक छुपाव-स्थान में आराम कर रहा है। सूबेदार धर्मपाल ने दूरदर्शिता और सूझबूझ से काम लेते हुए एक पड़ाव-दल को वहीं छोड़ दिया और स्वयं अपनी एक टुकड़ी के साथ बाढ़ग्रस्त नदी को पार कर लिया। विरोधियों को अचानक पकड़ने के उद्देश्य से इन्होंने चुपचाप छुपाव-स्थान की घेराबन्दी कर ली और एक राइफलमैन को अपने साथ लेकर यह रेंगते हुए विरोधियों के संतरी की ओर बढ़े। धावा-दल के अन्य सदस्य भी, हिदायतों के अनुसार आगे बढ़ आये। खतरे की परवाह किये बिना सूबेदार धर्मपाल ने बड़ी फुर्ती से संतरी पर हमला बोलकर उसे काबू में ले लिया। धावादल के दूसरे सदस्यों ने अन्य विरोधियों को घेर लिया। इस बीच एक विरोधी ने जो हथियार से लैस था, पास के एक गहरे नाले में छलांग लगा दी और जी-जान से बच निकलने की कोशिश की। उसका पीछा करते हुए सूबेदार धर्मपाल और उनके पीछे-पीछे दो राइफलमैन भी नाले में कूद पड़े। यद्यपि मूसलाधार वर्षा हो रही थी और जंगल सांपों तथा जोंकों से भरा पड़ा था, फिर भी ये लोग उस जगह की घेराबन्दी करके आधी रात तक उस इलाके को छानते रहे। जैसा कि अनुमान था, सुबह वह विरोधी बाहर निकल और उसने भाग निकलने की कोशिश की। सूबेदार धर्मपाल ने उसे पहले ही देख लिया था और वे रेंगते हुए, बिना किसी के देखे उसकी ओर बढ़ते रहे फिर, एकदम बेधड़क, वे उस पर झपट पड़े और उसे हथियार सहित, पकड़ लिया। इसी के परिणाम स्वरूप अन्ततः चार और विरोधी हथियारों और गोलाबारूद सहित, पकड़ लिये गये।

इस कार्रवाई में सुबेदार धर्मपाल ने, थल सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप अनुकरनीय साहस तथा असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

7. जे० सी०-25556 सूबेदार मोहिन्दर सिंह,
महार रेजिमेन्ट।

सूबेदार मोहिन्दर सिंह एक इंफैंट्री बटालियन की एक प्लाटून की कमान कर रहे थे जिसे कुछ विरोधियों को पकड़ने का काम सौंपा गया था। जिनके बारे में सूचना मिली थी कि वे उनके क्षेत्र में ठहरे हुए हैं। 10 मई, 1974 को इन्होंने अपनी कार्रवाई की योजना बनायी और अपनी प्लाटून को दो खोज दलों में बांट दिया जिनमें से एक दल का नेतृत्व उन्होंने स्वयं संभाला। ये दल रात के अंधेरे में चल पड़े और खोज शुरू कर दी। सात घण्टे के बाद, इनके दल के एक अगुआ स्काउट ने एक झोंपड़ी देखी जिसमें तीन विरोधी थे। सूबेदार मोहिन्दर सिंह तीन अन्य जवानों को साथ लेकर, विरोधियों के भाग निकलने के एक मात्र रास्ते को रोकने के लिये तुरन्त चल पड़े। दल के बाकी सदस्य इन लोगों को फायर कवर देने के लिये वहीं रुक गये। थोड़ी ही देर में विरोधियों ने इनकी दिशा में गोलीबारी शुरू कर दी। सूबेदार मोहिन्दर सिंह झोंपड़ी की ओर भागे और लगभग 17 फुट ऊंची एक सीधी कटान पर पहुंच गये जिसके नीचे वह झोंपड़ी थी। अपनी जान की परवाह किये बिना इन्होंने रणनाद किया और दो भागते हुए विरोधियों पर कूद पड़े। तीसरा विरोधी इनकी ओर गोली चला रहा था। सूबेदार मोहिन्दर सिंह ने, अपने एक साथी से, जो उनके साथ-साथ ही कूद पड़ा था गोली चलाने तथा भाग रहे विरोधी को पकड़ लेने के लिये कहा। अन्य दो विरोधी हतोत्साह हो गये और उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया। तीसरे विरोधी को भी जीवित पकड़ लिया गया। इसके अलावा बड़ी मात्रा में हथियार, गोलाबारूद तथा बहुमूल्य दस्तावेज भी पकड़े गये।

इस कार्यवाही में सूबदार मोहिन्दर सिंह ने, अनुकरणीय साहस और असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

8. जे० सी०-44542 सूबेदार योगेश्वर प्रसाद,
इंजीनियर्स।

एक इंजीनियर रैजिमेण्ट के कृतिक दल के उप कमान अफसर के रूप में काम करते हुए, सूबेदार योगेश्वर प्रसाद को एक बहुत ही महत्वपूर्ण काम सौंपा गया। इन्होंने बड़े उत्साह, धैर्य और दृढ़ता

के साथ इस कृतिक दल का स्वयं मार्गदर्शन किया। अपने सतत कठिन परिश्रम, सूझबूझ तथा परिश्रमशीलता से इन्होंने इस काम को निर्धारित समय से पहले ही पूरा कर दिया।

सूबेदार योगेश्वर प्रसाद ने आद्योपान्त, थल सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप, साहस और असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

9. जे० सी०-71505 नायब सूबेदार गुरदास राम,
महार रेजिमेण्ट।

नायब सूबेदार गुरदास राम नागालैण्ड में एक इन्फैन्ट्री बटालियन की एक प्लाटून की कमान कर रहे थे जिसे विरोधियों के छुपाव-स्थानों का पता लगाने और उन्हें नष्ट करने का काम सौंपा गया था। इन्होंने अपनी प्लाटून को दलों में बांट कर खोज की योजना बनायी। 8 मई, 1974 को, खोज के दौरान, अगुआ स्काउट ने एक खेती-झोंपड़ी में दो आदमियों को देखा। नायब सूबेदार गुरदास राम आगे की ओर दौड़े और उसी समय इन्होंने उन व्यक्तियों को भागते हुए देखा, जिससे इस बात की पुष्टि हो गयी कि वे विरोधी ही हैं। उन्होंने अपने जवानों से, उनमें से एक का पीछा करने के लिये कहा और स्वयं वे दूसरे की ओर भागे। पहाड़ी से नीचे की ओर पीछा करते हुए, नायब सूबेदार लगभग 25 फुट नीचे एक ऊंची चट्टान पर आ पहुंचे। खतरे की परवाह किये बिना वे वहां से कूद पड़े और विरोधी का पीछा करते रहे। जब दोनों के बीच का फासला लगभग 30 गज ही रह गया और नायब सूबेदार गुरदास राम उसे साफ देख सकते थे, तब संदिग्ध व्यक्ति पर हिप पोजीशन से स्टेन गन चलाई। विरोधी निष्प्राण होकर गिर पड़ा।

इस कार्रवाई में नायब सूबेदार गुरदास राम ने, थल सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप, अनुकरणीय साहस और असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

10. जे० सी० 61939 नायब सूबेदार बिन्धोज लिम्बू,
असम राइफल्स।

28 अप्रैल, 1974 को सूचना मिली कि, हथियारों से लैस, कुछ विरोधी मिजोरम के माइते नामक गांव के इलाके में छिपे हुए हैं। नायब सूबेदार बिन्धोज लिम्बू ने तुरन्त दो टुकड़ियां इकट्ठी कीं और उस इलाके की ओर चल दिये। सत्रह मील पैदल चल कर वे उस गांव में पहुंचे और वहां छानबीन शुरू कर दी। यद्यपि, इनके पास बहुत कम जवान थे, फिर भी, इन्होंने बाहर निकलने के रास्ते बन्द कर दिये और किसी को भी भागने नहीं दिया। बड़े धैर्य और दृढ़ता से काम करते हुए, इन्होंने ग्रामवासियों से हथियारों के बारे में सुराग पा ही लिया और अन्ततः 2 मई, 1974 को वहां से कुछ हथियार बरामद करने में सफल हो गए।

इस कार्रवाई में नायब सूबेदार बिन्धोज लिम्बू ने, थल सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप, अनुकरणीय साहस, दृढ़ संकल्प तथा असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

11. 9092571 बटालियन हवलदार मेजर ओंकार सिंह,
जम्मू और कश्मीर मिलिशिया।

11 जून, 1973 को जम्मू और काश्मीर मिलिशिया की एक बटालियन को पिम्पल जो हमारी एक पिकेट से आगे एक प्रभावशाली स्थान है, के सामने से पाकिस्तानी सुरंगों को हटाने का आदेश दिया गया ताकि उस उथले भाग पर प्रेक्षण चौकी स्थापित की जा सके। लेकिन इस काम के लिए यूनिट के पास कोई इंजीनियर नहीं थे। बटालियन हवलदार मेजर ओंकार सिंह जिन्होंने फील्ड इंजीनियरी का कोर्स किया हुआ था, इस काम को करने के लिये आगे आए और दो जवानों के साथ इस काम में जुट गये। शत्रु से होने वाले अन्देशों की परवाह न करते हुए हवलदार मेजर ओंकार सिंह और उनके जवानों ने न केवल सुरंगों का सारा ढेर वहां से साफ किया, बल्कि वहां एक प्रेक्षण चौकी भी स्थापित कर ली। इस प्रक्रिया में सुरंग फट जाने से इनका एक जवान आहत हो गया। इन्होंने अपनी पगड़ी को फाड़कर उस जवान के पट्टी बांधी और उसे अपनी पीठ पर लादकर सुरक्षित स्थान पर ले आये। यह काम पूरा हो जाने पर, इन्होंने और दूसरे जवान ने अपना ध्यान पिम्पल के बायें प्रेक्षण पर केन्द्रित किया क्योंकि वहां भी शत्रु ने सुरंगें बिछा रखी थीं। ये और सारे क्षेत्र से सुरंगें साफ करने में सफल हुए।

इस कार्रवाई में बटालियन हवलदार मेजर ओंकार सिंह ने, थल सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप अनुकरणीय साहस, दृढ़-संकल्प तथा असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

12. 3345206 हवलदार बलदेव सिंह,
सिख रेजिमेण्ट।

11 जुलाई, 1974 को इस बात की सूचना मिलने पर कि नागालैण्ड के एक इलाके में एक विरोधी नेता ठहरा हुआ है, उस इलाके पर छापा मारने की योजना बनायी गयी। उस विरोधी नेता को पकड़ने के लिये संगठित दल की अगुआ टुकड़ी की कमान हवलदार बलदेव सिंह के हाथ में थी। दल को तीन टुकड़ियों में बांटा गया और वे दुर्गम और घुमावदार रास्तों को तय करते हुए, विरोधी नेता के ठहराव-स्थान की ओर बढ़े। लेकिन तभी एक आदमी को शिविर से निकल कर भागते देखा गया। दल के कमाण्डर ने उस व्यक्ति पर गोली चलायी। हवलदार बलदेव सिंह ने अपनी जान की कतई परवाह न करते हुए उस पर हमला किया और उसे मार डाला।

इस कार्रवाई में हवलदार बलदेवसिंह ने थलसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप साहस और असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

13. 3350507 हवलदार निरंजन सिंह,
सिख रैजिमैण्ट।

20 जून, 1971 को हाई आल्टीट्यूट वारफेयर स्कूल में यह सूचना मिली कि सैनिकों को ले जाती हुई एक गाड़ी जोजिला के निकट खड़ी चट्टान परसे नीचे एक खाई में गिर गई है। हाई आल्टीट्यूट वारफेयर स्कूल के एक अफसर तथा 8 इन्स्ट्रक्टरों का एक बचाव-दल तत्काल ही दुर्घटना स्थल की ओर रवाना हो गया। खराब मौसम, बरफीली हवाओं और आगे कम दिखाई देने के बावजूद बचाव-दल उस समय दुर्घटना-स्थल पर पहुंचा, जब कि चारों ओर घनघोर अंधेरा छा गया था। उन्हें बताया गया कि नीचे केवल एक ही व्यक्ति जीवित है। इस दल ने उस व्यक्ति को बचाने के लिए हर संभव उपाय करने का निर्णय किया। घायल व्यक्ति के

पास पहुंचने के लिए सबसे जल्दी पहुंचने का रास्ता परपाती क्षेत्र और खतरनाक मलबे से भरे क्षेत्र के ऊपर से 500 फुट से अधिक की सीधी ढलान से होकर था।

हवलदार निरंजन सिंह ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए नीचे जाने के लिये अपने आप को अर्पित किया। एक रस्सा डाला गया और वे बड़े साहस के साथ उस रस्से के सहारे सीधे ढलान पर से नीचे उतरने लगे। घायल व्यक्ति के पास पहुंचने पर उन्होंने देखा कि उस व्यक्ति की जीवन रक्षा तुरन्त होनी चाहिए क्योंकि उसकी हालत तेजी से बिगड़ती जा रही थी। ऊपर से पत्थरों के आ गिरने के निरन्तर खतरे के बावजूद उन्होंने 15 मिनट के अन्दर उस घायल को स्ट्रेचर पर बांध दिया। स्ट्रेचर के साथ दो रस्सियां बांध दी गई और उसके बाद सबसे खतरनाक कार्य शुरु हुआ। बहुत धीरे-धीरे स्ट्रेचर को ऊपर की ओर उठाया गया। वे स्ट्रेचर को आखरी ढाल तक ले आए। जहां से स्ट्रेचर 90 डिग्री सीधी एक पुश्ता-दीवार पर से खींचना था। आधे रास्ते में स्ट्रेचर फंस गया। हवलदार निरंजन सिंह रेंगकर स्ट्रेचर के पास पहुंच गए और उन्होंने भारी व्यक्तिगत खतरा उठाते हुए रस्सी को दांतों में फंसा कर स्ट्रेचर को छुड़ा लिया। अगली प्रातः मृतकों को उठाने के खतरनाक काम में भाग लेने के लिए वे पुनः वहां पहुंच गए।

इस कार्रवाई में हवलदार निरंजन सिंह ने थलसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप साहस और असाधारण कर्तव्यपरायणता परिचय दिया।

14. 2853685 नायक माधो सिंह
राजपूताना राइफल्स।

16 अक्तूबर, 1973 की रात्रि को इन्फैन्ट्री बटालियन की एक टुकड़ी को विरोधियों के एक शिविर पर आक्रमण करने का काम सौंपा गया था। नायक माधो सिंह इस दल के सदस्य थे और इसकी एक टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे। पहाड़ी इलाके में 12 घन्टे तक चलने के पश्चात् वे विरोधियों के क्षेत्र में जा पहुंचे। दल के कमांडर ने सैनिकों को चार टुकड़ियों में बांट दिया और दो टुकड़ियों के एक साथ आक्रमण करने की योजना बनायी। नायक माधो सिंह आक्रमण करने वाली एक टुकड़ी के साथ थे। विरोधियों के शिविर तक का आखिरी 500 गज का फासला घनी झाड़ियों से भरा हुआ सीधी चढ़ाई का था। नायक माधो सिंह छुपाव स्थान के पास पहुंच गए। पलक भरते ही वे संतरी पर झपट पड़े और उसकी राइफल छीन कर उसे अपने काबू में ले लिया। इसी बीच अन्य विरोधी हथियार और गोला बारूद बीछे छोड़ कर शिविर से भाग निकले।

इस कार्रवाई में नायक माधो सिंह ने थलसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप साहस तथा असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

15. 1423474 नायक कुवंर पाल सिंह
इंजीनियर्स।

एक इंजीनियर रेजिमेंट में कार्य करते हुए नायक कुवंर पाल सिंह को एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया था। इन्होंने स्वयं कृन्तिक दल का नेतत्व किया और निरंतर उत्साह, धैर्य एवं दृढ़ता से काम किया। दृढ़ निश्चय, सूझबूझ तथा उत्साह के साथ इन्होंने निर्धारित समय के अन्दर अपना काम पूरा कर दिखाया।

इस कार्रवाई में नायक कुवंर पाल सिंह ने थलसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप अनुकरणीय साहस तथा असाधारण कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

16. 9204792 नायक अमरजीत सिंह,
महार रेजिमेंट।

नायक अमरजीत सिंह इन्फैन्ट्री बटालियन की उस घात लगाने वाली टुकड़ी के सदस्य थे जिसे फैक जिले में योराबम्मी के पश्चिमी क्षेत्र में 2 सितम्बर, 1974 को शुरू की गई संक्रिया के दौरान विरोधियों के बाहर निकलने के सम्भावित मार्ग को रोकने का काम सौंपा गया था। जब विरोधियों की ओर से इस दल पर स्वचालित हथियारों से जोरदार गोली-बारी की जा रही थी, नायक अमरजीत सिंह ने, जो उस समय नेतृत्व कर रहे थे अपनी स्टेनगन से विरोधियों पर तत्काल धावा कर दिया। इस आक्रमण से घबरा कर विरोधी जंगल की ओर भाग खड़े हुए। नायक अमरजीत सिंह जब उस स्थान के निकट थे जहां से विरोधी गोली-बारी कर रहे थे तो उन पर बायीं ओर से गोली चलाई गई। इससे विचलित हुए बिना उन्होंने अपनी स्टेनगन से विरोधियों पर पुनः धावा बोल दिया। इस सामयिक और साहसपूर्ण कार्रवाई के परिणामस्वरूप एक विरोधी को हथियार और गोला-बारूद के सहित पकड़ लिया गया।

इस कार्रवाई में नायक अमरजीत सिंह ने थल सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप साहस और असाधारण कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

17. 131812 नायक खिम खोलेट कुकी।
असम राइफल्स।

लांगचिंग ग्राम के निकट कुछ विरोधियों के उपस्थित होने की सूचना मिलने पर असम राफल्स की एक टुकड़ी को विरोधियों के छुपे स्थान को खोजने और उस पर धावा बोलने का काम सौंपा गया था। यह टुकड़ी 8 सितम्बर 1973 को अपनी चौकी से चली और सूर्योदय से पूर्व चांगलांग के अहाते में पहुंच गई। विरोधियों की सही स्थिति के बारे में मालूम नहीं था लेकिन ऐसा शक हुआ कि वे एक खेती झोंपड़ी में छुपे हुए हैं। दल को तीन टुकड़ियों में बांट दिया गया। दो टुकड़ियों के मुख्य दल को पहाड़ी से नीचे उतरते हुए विरोधियों का पता लगाना था। नायक खिम खोलेट कुकी इन टुकड़ियों में से एक का नेतृत्व कर रहे थे। यह देखा गया कि नीचे पहाड़ी की ढलान पर बनी खेती झोंपड़ियों में से धुंआ निकल रहा था। थोड़ी देर में तीन विरोधियों को झोपड़ी में से निकल कर नीचे पहाड़ी की ओर भागते हुए देखा गया। नायक कुकी ने उनको देख लिया और उनको ठहरने तथा आत्म-समर्पण करने के लिए

आवाज दी। इस पर विरोधियों ने मुड़कर गोली चलाई और नीचे की तरफ दौड़ पड़े। नायक कुकी ने अपनी टुकड़ी को विरोधियों का पीछा करते के लिए प्रेरित किया। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए उन्होंने पीछा करने का नेतृत्व किया और अपनी स्टेनगन से एक भागते हुए विरोधी को मार गिराया। टुकड़ी की इस सफल कार्रवाई से भूमिगत कुख्यात नेता तथा दो अन्य विरोधियों का अन्त हो गया और तीन हथियार तथा कई गोलियां बरामद हुई।

इस कार्रवाई में नायक खिम खोलेट कुकी ने थल सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप साहस तथा असाधारण कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

18. 142096 लांस नायक महावीर प्रसाद,
असम राइफल्स।

20 जुलाई, 1973 को असम राइफल्स के एक जूनियर कमीशंड आफिसर के नेतृत्व में 15 सैनिकों के एक विशेष गश्ती दल को नागालैंड के फ्रैंक ग्राम में धन एकत्र करने और जबरदस्ती भर्ती करने में लगे कुछ विरोधियों को पकड़ने का काम सौंपा गया था। लांस नायक महावीर प्रसाद जो एक अगुआ दल का नेतृत्व कर रहे थे, विरोधियों की गतिविधियों को रोकने के लिए अपनी चौकी से चल पड़े। जब यह दल उस मकान की सीमा में पहुंचा, जहां कि विरोधी छुपे हुए थे तो उन पर गोली चलाई गई। लांस नायक महावीर प्रसाद ने, विरोधियों के अधिक संख्या में होने की चिन्ता न करते हुए, जवाब में तत्काल गोलियां चलाई। दृढ़ निश्चय और बड़े धैर्य से इन्होंने उस मकान पर धावा बोल दिया। हिप पोजीशन से गोली चलाते हुए इन्होंने दो विरोधियों को मार गिराया और अन्य दो को घायल कर दिया। हालांकि उन्हें स्वयं भी बाजू और जांघ में गोलियां लगीं। उन्होंने विरोधियों के गिरोह को अकेले ही काबू में कर लिया।

इस कार्रवाई में लांस नायक महावीर प्रसाद ने, थलसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप अनुकरणीय साहस तथा असाधारण कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

19. 5838180 राइफलमैन दिल बहादुर छेत्री,
गोरखा राफल्स।

राइफलमैन दिल बहादुर छेत्री एक गश्ती दल के सदस्य थे जिसे नागालैण्ड के घने जंगल में स्थित विरोधियों के एक शिविर पर छापा मारने का काम सौंपा गया था। शिविर की रक्षा एक सशस्त्र संतरी कर रहा था। इन्हें दल के अग्रिम गुप्तचर के रूप में चुना गया था जिसे छुपाव स्थान की रखवाली कर रहे सन्तरी को समाप्त करने के लिए नियुक्त किया गया था। यह काम जोखिम से भरा था और घने जंगल में सीधी ढलान पर बनी केवल एक ही पगडंडी से रेंगते हुए चलना था। वे अपनी टुकड़ी को बहुत सावधानी से उस स्थान तक ले गए। एकाएक उनका संतरी से सामना हो गया। जिसने चट्टान के पीछे से गोली चलाने के लिए राइफल तान ली थी। वे तुरन्त संतरी पर झपट पड़े और साथ ही गोली चला दी। संतरी तो मारा गया लेकिन शिविर से दूसरे विरोधियों ने भारी गोली-बारी शुरू कर दी। इन्होंने विचलित हुए बिना अपने दल के साथ धावा बोल दिया और विरोधियों के शिविर में भारी घबराहट पैदा कर दी। इस कार्रवाई में कई विरोधी मारे गए और भारी मात्रा में हथियार, गोलाबारूद तथा अन्य सामान बरामद हुआ।

इस कार्रवाई में राइफलमैन दिल बहादुर छेत्री ने, थल सेना की उच्चतम पराम्पराओं के अनुरूप अनुकरणीय साहस तथा असाधारण कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

20. 4045669 राइफलमैन शिव सिंह नेगी,
गढ़वाल राइफल्स।

26 अप्रैल, 1974 को राइफलमैन शिव सिंह नेगी को पश्चिमी क्षेत्र में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर थल सेना और सीमा सुरक्षा दल की एक संयुक्त गश्ती टुकड़ी में नियुक्त किया गया था। जब वह दल अपनी एक चौकी की ओर बढ़ रहा था तो शत्रु ने हल्की मशीनगन और मशीनगन से गोलियां चला दीं जिसमें गश्ती दल का नेता, सीमा सुरक्षा दल का एक उप-निरीक्षक, गम्भीर रूप से घायल हो गया। इस प्रकार असमर्थ होकर वे दुश्मन की गोली-बारी के नीचे गिरकर फंसे रह गये जबकि बाकी गश्ती दल रेंगकर सुरक्षित स्थान पर पहुंच गया। राइफलमैन शिव सिंह नेगी ने जब दल के नेता के जीवन को संकट में देखा तो वे अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए वापस उनके पास पहुंचे और उन्हें अपनी पीठ पर उठा कर रेंगते हुए उस स्थान तक ले आये जहां हमारे शेष सैनिक मोर्चा लगाए बैठे थे।

इस कार्रवाई में राइफलमैन शिव सिंह नेगी ने, थल सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप असाधारण साहस और उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

21. 142001 राइफलमैन पुख बहादुर,
असम राइफल्स।

राइफलमैन पुख बहादुर असम राइफल्स के एक गश्तीदल में हल्की मशीनगन के नम्बर एक के रूप में नियुक्त थे। जिसे नागालैण्ड की एक चौकी पर तैनात किया गया था। 22 जून, 1973 को विरोधियों के एक गिरोह को उस क्षेत्र में घूमते देखा गया। स्थिति का सही जायजा लेकर गश्ती दल के नेता ने अपनी लाइट मशीन गन टुकड़ी को आदेश दिया कि वे गश्ती दल को हुए वे विरोधियों पर हमला करने के लिए अपनी गोली से ओट दें। यह बात विरोधियों की नजर में आ गयी और उन्होंने अपने स्वचालित हथियारों से गोली बारी शुरू कर दी। दल को कोई नुकसान न होने पाए इस-लिए राइफलमैन पुख बहादुर ने लाइट मशीन गन टुकड़ी को विरोधियों पर टूट पड़ने का आदेश दिया और स्वयं फायर करने में पहल की। इस बुद कदम से विरोधियों के हौंसले टूट गए और उन्हें मजबूर हो कर भागना पड़ा। राइफलमैन पुख बहादुर ने पहाड़ी के नीचे तक उनका पीछा किया। इस दौरान एक विरोधी मारा गया और दूसरा घायल हुआ

जिसकी पीछे मृत्यु हो गयी । बाद में यह पता चला कि इस घटना में दो और विरोधी भी घायल हुए थे ।

इस कार्रवाई में राइफलमैन पुख बहादुर ने असाधारण साहस तथा असाधारण कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

22. 150697 राइफलमैन खरका बहादुर छेत्री.
असम राइफल्स ।

18/19 अप्रैल, 1973 की रात्रि को राइफलमैन खरका बहादुर छेत्री नागालैण्ड में एक गश्ती दल के अगुआ के रूप में काम कर रहे थे । इस दल को विरोधियों के एक छुपाव स्थान का पता लगाने तथा उस पर धावा बोलने का कार्य सौंपा गया था । राइफलमैन छेत्री गश्ती दल को संदिग्ध स्थान पर एक दुर्गम रास्ते से ले गये ताकि विरोधियों के मन्तरियों की उनपर नजर न पड़े । इन्होंने शेष सैनिकों के आने की प्रतीक्षा नहीं की और दल के नेता तथा चार अन्य सैनिकों के साथ छुपाव स्थान पर तुरन्त धावा बोल दिया । इनकी इस तत्कालिक कार्रवाई से विरोधी आश्चर्यचकित रह गए और वे अन्धेरे में जंगल की ओर भाग गए। राइफलमैन छेत्री के इस साहसपूर्ण कार्य से हथियार और गोलाबारूद का काफी बड़ा भण्डार हाथ लगा ।

इस कार्रवाई में राइफलमैन खरका बहादुर छेत्री ने असाधारण साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

23. 1450792 सैपर जगतार सिंह,
61 इंजीनियर रेजिमेंट ।

एक इंजीनियर रजिमेंट के साथ रहते हुए सैपर जगतार सिंह को एक बहुत महत्वपूर्ण काम सौंपा गया था । इन्होंने लगातार उत्साह, धैर्य और दृढ़ता से काम किया । इन्होंने बराबर कर्त्तव्य निष्ठा, सूझबूझ और मेहनत से कार्य किया और निर्धारित समय के अन्दर ही काम पूरा करने में सफल हुए ।

इस प्रकार सैपर जगतार सिंह ने थल सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप बड़े साहस तथा असाधारण कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

24. 13818555 सिपाही (ड्राइवर) केसवन बाला कृष्णन,
आर्मी सर्विस कोर । (मरणोपरान्त)

सिपाही (ड्राइवर) केसवन बाला कृष्णन आर्मी सर्विस कोर कम्पनी के एक ड्राइवर थे । सर्दियों के लिए सामान जुटाने तथा गुरेज क्षेत्र में सैनिकों को ले जाने के लिए इन्हें विशेष रूप से चुना गया था । 7 अक्तूबर, 1973 को वे अपनी गाड़ी में सैनिक सामान तथा सह-ड्राइवर की सीट पर सीमा सुरक्षा दल के एक हैड कांस्टेबल को लेकर चले । सीमा सुरक्षा दल के 4 कार्मिक भी गाड़ी में सफर कर रहे थे । एक मोड़ से गाड़ी निकालते समय गाड़ी का स्टीयरिंग जाम हो गया और गाड़ी सड़क से कुछ हट गई। सिपाही बाला कृष्णन ने ब्रेक लगाए लेकिन बर्फ गिरने के कारण जमीन में फिसलन आ गई थी, अतः गाड़ी गहरे नाले की ओर नीचे खिसकती गई । विकट खतरे को भांपते हुए उन्होंने अन्य लोगों को कूद जाने के लिए कहा और स्वयं गाड़ी को संभालने और बचाने के लिए भरसक प्रयत्न करते रहे । समय पर सावधान कर देने के कारण मुसाफिर तुरन्त बाहर कूद गए । शीघ्र ही गाड़ी नीचे ढलान की ओर फिसलती गई और सीधी नाले में जा गिरी । सिपाही बाला कृष्णन को गहरी चोट लगी जिनके कारण बाद में अस्पताल में उनकी मत्यु हो गई। इस तरह उन्होंने सीमा सुरक्षा दल के 5 सह-यात्रियों की जान बचाई और अपनी जान बचाने की गर्ज से गाड़ी को नहीं छोड़ा ।

सिपाही केसवन बाला कृष्णन ने, थल सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप अनुकरणीय साहस और असाधारण कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

कृ० बालचन्द्रन,
राष्ट्रपति के सचिव

गृह मंत्रालय

नई दिल्ली-110001, दिनांक 8 जनवरी 1976

सं० यू०-13019/7 (i) /75-ए० एन० एल० —भारत सरकार के गृह मंत्रालय की तारीख 3 सितम्बर, 1974 की अधिसूचना संख्या यू०-13019/9 (iii)/74-ए० एन० एल० में आगे और आशोधन करते हुये, राष्ट्रपति यह निदेश देते है कि उक्त अधिसूचना में आने वाले अंक और शब्द "2 सितम्बर, 1975", की जगह, जिन्हें भारत सरकार के गृह मंत्रालय की दिनांक 2 सितम्बर, 1975 की अधिसूचना संख्या यू०-13019 /7 (i) / 75-ए० एन० एल० द्वारा आशोधित करते हुये "31 दिसम्बर, 1975" किया गया था, अब "31 मार्च, 1976" पढ़े जायेंगे ।

सं० यू०-13019/7/(ii)/75-ए० एन० एल० —भारत सरकार के गृह मंत्रालय की तारीख 3 सितम्बर, 1974 की अधिसूचना संख्या यू०-13019/9 (iv)/74-ए० एन० एल० में आगे और आशोधन करते हुये, राष्ट्रपति यह निदेश देते हैं कि उक्त अधिसूचना में आने वाले अंक और शब्द "2 सितम्बर, 1975" की जगह, जिन्हें भारत सरकार के गृह मंत्रालय की दिनांक 2 सितम्बर, 1975 की अधिसूचना संख्या यू०-13019/7 (ii)/-75-ए० एन० एल० द्वारा, आशोधित करते हुये, "31 दिसम्बर, 1975" किया गया था, अब "31 मार्च, 1976" पढ़े जायेंगे ।

कैलाश प्रकाश, उप सचिव

पेट्रोलियम और रसायन मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 24 नवम्बर 1975

संकल्प

सं० जे०-11011/8/72-पी० पी० डी०—तेल मूल्य समिति के गठन के सम्बन्ध में पेट्रोलियम और रसायन मंत्रालय, भारत सरकार के दिनांक 16 मार्च, 1974 के संकल्प संख्या जे० 11011/8/72 के पैरा 5 (II) का आंशिक संशोधन करते हुए एतद्द्वारा निम्नलिखित संशोधन किये जाते हैं :

"श्री एन० कृष्णन, विशेषकार्य अधिकारी खान विभाग नई दिल्ली" के लिए "श्री एन० कृष्णन, सेवा निवृत्त मुख्य लागत लेखा अधिकारी, वित्त मंत्रालय व्यय विभाग नई दिल्ली" पढ़े

2. यह 1-4-1975 से लागू होगा ।

एम० रामस्वामी, संयुक्त सचिव

कृषि और सिंचाई मंत्रालय

(कृषि विभाग)

(अकाल)

सं० 15-2/74-एस० आर० 2—भारतीय लोक अकाल न्यास के प्रशासन के नियमों के नियम 7 के अन्तर्गत बनाए गए उप-नियम 7 के उपबन्धों के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार भारतीय लोक अकाल न्यास की 1 जुलाई, 1973 से 30 जून, 1974 तथा 1 जुलाई, 1974 से 30 जून, 1975 तक की अवधि की प्राप्तियों, भुगतान और परिसम्पत्ति का लेखा-परीक्षित लेखा, प्रकाशित करती है :

अनुसूची 1

30-6-1974 की अवधि की समाप्ति पर भारतीय लोक अकाल न्यास के लेखा के ब्यौरों का विवरण ।

1.	कोषाध्यक्ष, धर्मस्व धनराशि, पश्चिम बंगाल के अधिकारी में सरकारी जमानत में धर्मस्व धनराशि (एण्डोमेण्ट फण्ड)	32,78,400.00 रुपये
2.	स्टेट बैंक आफ इंडिया, नई दिल्ली के पास अल्पावधि पूंजी—निवेश	50,000.00 रुपये
3.	30-6-74 को स्टेट बैंक आफ इंडिया, नई दिल्ली के पास चालू खाते में नकद धनराशि	1,48,677.05 रुपये
	योग	34,77,077.05 रुपये

जांच करने पर सही पाया गया

ह० 22-8-74

(पी० एच० जैन)
महालेखाकार केन्द्रीय राजस्व, नई दिल्ली ।

ह० 13-8-74

(पी० पी० गंगाधरन)
अवैतनिक सचिव

अनुसूची 2

भारतीय लोक अकाल न्यास

1-7-73 से 30-6-74 तक की अवधि की प्राप्तियों तथा भुगतान के लेखे का सार ।

1.	अथ शेष		1.	अनुदान की अदायगी :—	
	(चालू खाता)	70,452.40 रु०		(क) असम	15,000 रु०
	(नियतावधि जमा)	50,000.00 रु०		(ख) उड़ीसा	10,000 रु०
		1,20,452.40 रु०			25,000 रु०
2.	32,78,400 रु० की धर्मस्व धनराशि (एण्डोमेंट फण्ड) पर ब्याज 98,352 रु० कोषाध्यक्ष, धर्मस्व धनराशि, पश्चिम बंगाल द्वारा स्रोत पर वसूल किये गये शुल्क को निकालकर	983.52 रु०	2.	एस० ए० एस० लेखाकार को मानदेय	600 रु०
3.	खर्च न हुई रापिस की जाने वाली शेष राशि	1,094.25 रु०	3.	इतिशेष :—	
		97,368.48 रु०			

4. स्टेट बैंक आफ इण्डिया, नई दिल्ली के पास अल्पावधि जमा राशि पर ब्याज	2,361.92 रु०	(क) स्टेट बैंक आफ इंडिया, नई दिल्ली के पास अल्पावधि जमा .	50,000.00 रु०
	2,24,277.05 रु०	(ख) बैंक में नकद जमा	1,48 677.05 रु०
			1,98 677.05 रु०
		योग	2,24,277.05 रु०

जांच करने पर सही पाया गया
ह०/ (पी० एन० जैन) 22-8-74
महालेखाकार, केन्द्रीय राजस्व, नई दिल्ली ।

ह० / (पी० पी० गंगाधरन)
13-8-74
अवैतनिक सचिव

अनुसूची 1

दिनांक 30-6-75 को समाप्त होने वाली अवधि के अन्त में भारतीय लोक अकाल न्यास के लेखा के ब्यौरे का विवरण

1. कोषाध्यक्ष धर्मस्व, सम्पत्ति, पश्चिम बंगाल के अधिकार में सरकारी जमानत में धर्मस्व धनराशि (एण्डोमेंट फण्ड)	32,78,400.00 रु०
2. दिनांक 30-6-75 को स्टेट बैंक आफ इंडिया के पास चालू खाते में नकद धनराशि . . .	1,23,839.06 रु०
योग .	34,02,239.06 रुपये

जांच करने पर सही पाया गया
ह०/
महालेखाकार केन्द्रीय राजस्व
नई दिल्ली

ह०/ 29-7-75
(पी० पी० गंगाधरन)
अवैतनिक सचिव

अनुसूची-2

भारतीय लोक अकाल न्यास

1-7-74 से 30-6-75 तक की अवधि के दौरान प्राप्ति तथा भुगतान के लेखा का सार

1. ग्रथ शेष				1. नीचे लिखी सरकारों को अनुदान की अदायगी	
चालू खाता .	1,48,677.05 रु०			(1) पश्चिम बंगाल	25,000.00 रु०
निक्षतावधि जमा .	50,000.00 रु०			(2) मध्य प्रदेश	25,000.00 रु०
	1,98,677.05 रु०			(3) उत्तर प्रदेश	25,000.00 रु०
2. 32,78,400 रु० की धर्मस्व धनराशि (एण्डोमेंट फण्ड) पर ब्याज 98,352.00 रु०				(4) राजस्थान	25,000.00 रु०
				(5) गुजरात	25,000.00 रु०
				(6) असम	25,000.00 रु०
कोषाध्यक्ष, धर्मस्व धनराशि, पश्चिम बंगाल द्वारा स्रोत पर वसूल किये गये शुल्क को निकालकर . .	983.52 रु०	97,368.48 रु०		(7) उड़ीसा	25,000.00 रु०
					1,75,000.00 रु०

3. खर्च न हुई वापिस की जाने वाली शेष धनराशि	229.40 रु०	2. एस० ए० एस० लेखाकारों को मानदेय	175.00 रु०
4. स्टेट बैंक आफ इंडिया, नई दिल्ली के पास अल्पावधि जमा राशि पर ब्याज	2,739.13 रु०	3. इति शेष (बैंक में जमा राशि)	1,23,839.06 रु०
	2,99,014·06 रु०		2,99,014.06 रु०

जांच करने पर सही पाया गया

ह०/
महालेखाकार केन्द्रीय राजस्व
नई दिल्ली

ह०/ 29-7-75
पी० पी० गंगाधरन
अवैतनिक सचिव

चन्द्र प्रकाश, उप-सचिव

ऊर्जा मंत्रालय

(कोयला विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 5 जनवरी, 1976

संकल्प

सं० 55011/31/75-पी० आई० आर०—भारत सरकार ने राष्ट्रीकृत कोयला खानों की सुरक्षा के समुचे प्रश्न पर विचार करने के लिए एक समिति गठित करने का निश्चय किया है । इसमें निम्नलिखित व्यक्ति शामिल होंगे :—

1. श्री एस० बी० लाल, संयुक्त सचिव, ऊर्जा मंत्रालय, (कोयला विभाग) — अध्यक्ष
2. श्री एस० दास गुप्त महासचिव, भारतीय राष्ट्रीय खान मजदूर संघ — सदस्य
3. श्री चतुरानन मिश्र, अखिल भारतीय ट्रेड युनियन कांग्रेस, की बिहार राज्य समिति । — ,,
4. श्री डी० बंदयोपाध्याय, संयुक्त सचिव, श्रम मंत्रालय — ,,
5. लेफ्टिनेण्ट जनरल के० एस० ग्रेवाल, अध्यक्ष, कोल इण्डिया लिमिटेड — ,,
6. श्री एच० बी० घोष, प्रबंध-निदेशक, केन्द्रीय खान आयोजन व डिजाइन संस्थान । — ,,
7. श्री आर० एन० शर्मा, उपाध्यक्ष/ प्रबंधक-निदेशक, भारत कोकिंग कोल लिमिटेड । — ,,
8. श्री सी० बलराम, प्रबंध-निदेशक, पश्चिमी कोयला क्षेत्र लि० । — ,,
9. श्री बी० एल० बडेरा, प्रबंध निदेशक, सेन्ट्रल कोल फील्डस लि० । — ,,
10. श्री रमैयाजी वर्मा, प्रबंध-निदेशक, ईस्टर्न कोल फील्ड्स लि० । — सदस्य
11. श्री बी० एन० रमन, अध्यक्ष/ प्रबंध निदेशक, सिंगरैनी कोलियरीज, कं० लि० । — ,,
12. श्री एस० बागची, निदेशक, केन्द्रीय खनन अनुसंधान केन्द्र । — ,,
13. श्री के० सीतारामन, निदेशक, ऊर्जा मंत्रालय, (कोयला विभाग) — सदस्य सचिव

2. समिति के विचारार्थ विषय इस प्रकार होंगे :—

(1) कोयला खानों से संबंधित ऐसे मामलों की समीक्षा करना जहां खुदाई का काम ऐसे क्षेत्रों में होता है जो जल प्लावित हैं और जहां आग की संभावना होती है, यह देखना कि क्या पर्याप्त सुरक्षा उपाय किए गए हैं तथा जहां आवश्यक हो ऐसे कदम उठाने का सुझाव देना जिनसे खनन कार्य पूर्णतया सुरक्षित हो सके।

(2) कोयला खानों में होने वाली दुर्घटनाओं के कारणों की छानबीन करना तथा उन कारणों को दूर करने और दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए खनन संगठनों द्वारा अपनाए गए उपायों की पर्याप्तता पर विचार करना ।

(3) कोयला खानों में सुरक्षा, बचाव तथा राहत कार्यों से संबंधित वर्तमान प्रबंधों की समीक्षा करना ।

(4) राष्ट्रीकृत कोयला खानों में ऐसे कदम उठाने की सिफारिश करना जिनसे सुरक्षा के प्रति चौकसी बढ़े तथा सुरक्षा, बचाव और राहत कार्यों के प्रबंधों में सुधार हो ।

3. समिति को अपनी रिपोर्ट यथा-शीघ्र और हर हालत में 30 अप्रैल, 1976 से पूर्व भारत सरकार को प्रस्तुत करनी होगी।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक एक प्रति भारत सरकार के सभी मंत्रालयों तथा विभागों, राष्ट्रपति, सचिवालय, प्रधान मंत्री सचिवालय, मंत्रिमंडल सचिवालय, लोक सभा/राज्य सभा सचिवालय, राज्य सरकारों तथा समिति के सभी सदस्यों को भेज दी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को सर्व-साधारण की जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

के० एस० आर० चारी, सचिव,

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1975

No. 4-Pres./76.—The President is pleased to approve the award of the "NAO SENA MEDAL"/"NAVY MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty and courage :—

1. Commander SAT PAL SINGH DHINDSA (00308 Z), Indian Navy.

On receiving information about an out-break of fire in Port Blair, Commander Sat Pal Singh Dhindsa alerted all service units in Port Blair and immediately mustered and equipped Naval personnel for fire fighting. At the scene of the fire, he co-ordinated the efforts of all Naval and Army personnel and prevented any panic being created. He also took initiative in coordinating and controlling the movement of water bowsers and regulated water supply. The timely action taken by Commander Dhindsa greatly helped in bringing the fire quickly under control.

In this action, Commander Sat Pal Singh Dhindsa displayed exceptional resourcefulness and organising ability which are in keeping with the best traditions of the Indian Navy.

2. Lieutenant Commander SUBRAMONIA GOPALA-KRISHNAN (00426 T), Indian Navy.

Lieutenant Commander Subramonia Gopalakrishnan was commissioned in the Indian Navy on 13th October, 1959 and qualified as an Observer in the Fleet Air Arm in June, 1963. He served in various aviation units with great distinction, including the fixed wing ALIZE Squadron and the SEAKING helicopter Squadron. He has more than 1300 hours of flying to his credit. While with the ALIZE Squadron, he flew 584 hours during a single period of two years. He was one of the few Observers who were specially selected in 1971 for conversion to SEAKING with the Royal Navy in the United Kingdom. He completed his training there achieving a highly satisfactory standard in both ground and air, and imbibing a sound knowledge of air anti-submarine tactics and operating procedures which he employed successfully in the numerous operational SEAKING sorties that he flew during the Indo-Pak Conflict 1971.

Lieutenant Commander Subramonia Gopalakrishnan thus displayed professional skill and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Navy.

3. Lieutenant Commander AMARJEET SINGH RAWAT (00473 Z), Indian Navy.

Lieutenant Commander Amarjeet Singh Rawat is a highly qualified Flying Instructor and holds a Master Green Instrument Rating on Seakings. While he was Squadron Flying Instructor, he flew 311 hours during the period April 1971 to December 1971, which is a remarkable achievement. On being converted to Seakings Helicopters, he was deputed to UK to undergo a regular Conversion Course on Helicopters which he did exceptionally well and he was selected as an Instructor for the next course. His professional ability and knowledge enhanced the prestige of the Indian Navy in U.K. He was appointed as a Senior Pilot of a Naval Air Squadron and within two years he had flown 586 hours. He has a total of 2460 hours of flying to his credit.

Lieutenant Commander Amarjeet Singh Rawat thus displayed professional skill and exceptional devotion to duty in keeping with the highest traditions of the Navy.

4. Lieutenant Commander EMMANUEL DEANE CHAUHAN (00480 R), Indian Navy.

Lieutenant Commander Emmanuel Deane Chauhan was commissioned in May 1961 and qualified as an Observer in October 1966. He is an outstanding Aviator and the senior-most QNI in the Naval Air Arm. He has 1500 hours of flying to his credit. He was deputed to the United Kingdom for conversion to Seakings. His performance there was most creditable and he secured the first rank. With his professional knowledge and devotion to duty, he converted a number of Observers to Seakings. He has been closely associated with the formulation of doctrines to be used in Naval Air Arm. Again in 1974, he was deputed to UK for acceptance flights of Seakings. He carried out this task with commendable professional competence.

Lieutenant Commander Emmanuel Deane Chauhan thus displayed professional competence and exceptional devotion to duty in keeping with the highest traditions of the Navy.

5. Lieutenant Commander (X)(P) FRANK RICHARD CLARKE (00544 K), Indian Navy.

Lieutenant Commander Frank Richard Clarke was commissioned on 1st July 1964. He qualified as a pilot in March 1966 and has proved to be an excellent ALIZE pilot. He is a qualified Flying Instructor, an Instrument Rating Instructor and holds a Master Green Instrument rating. He has nearly 1800 hours of flying with 143 day and 16 night deck landings on VIKRANT to his credit. During a single period of two years between July 1968 and July 1970, he flew a total of over 542 hours. During the Indo-Pak Conflict, 1971, he was the first pilot to carry out a bombing raid from VIKRANT on COX's Bazar and was also responsible for bombing and sinking a merchant ship in the Eastern Sector, thereby blocking a vital enemy line of communication.

Lieutenant Commander Frank Richard Clarke thus displayed great professional competence and exceptional devotion to duty in keeping with the highest traditions of the Navy.

6. Lieutenant VIDYA SAGAR MALHOTRA (00608 F), Indian Navy.

Lieutenant Vidya Sagar Malhotra was converted to helicopters in July 1969 and, thereafter, served in different flights of the Helicopter Squadron. He was then selected to undergo conversion to SEAKINGS with the Royal Navy. He saw active service in the SEAKING Squadron in December 1971 and flew numerous operational sorties both during day and night. Throughout the period of operations, he conducted himself in a commendable and dedicated manner. In July 1972 he was appointed as a Flying Instructor in the Helicopter Training School after training in the Air Force. In a short period of one year, he had flown over 300 hours.

Lieutenant Vidya Sagar Malhotra thus displayed professional skill and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Navy.

7. Lieutenant (SDAV) UNNIKRISHNAN NAIR (84567 Y), Indian Navy.

Lieutenant Unnikrishnan Nair was selected for the aircrewmen cadre of the Aviation Branch on 2nd April 1962. He stood first in the Aircrewmen Course and joined Naval Air Squadron for further flying training. He was commissioned on the 30th September, 1967. During the Indo-Pak Conflict, 1965, he was one of the specially selected ALIZE crew to

operate from an advanced base. He has flown as an aircrewman on various types of naval aircraft and has a total of 897.55 hours to his credit.

Lieutenant Unnikrishnan Nair displayed professional skill and exceptional devotion to duty in keeping with the best traditions of the Navy.

8. 86444 ANTHONY PANAKKAL KURIAKOSE, MECHANICIAN ENGINE ROOM ARTIFICER II, Indian Navy.

Anthony Panakkal Kuriakose was the Chief Engine Room Artificer of a Submarine. A large number of submarine personnel were trained by him. While his submarine was operating under extreme weather conditions, he successfully carried out repairs to an important equipment single-handedly and thus enabled his submarine to adhere to her scheduled programme. On another occasion, he, in utter disregard to his personal comfort, worked continuously for more than 48 hours and made an important equipment operational.

Mechanician Engine Room Artificer Anthony Panakkal Kuriakose displayed professional competence and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Navy.

9. 52869 PARTHASARTHY RAMADURAI, ENGINE ROOM ARTIFICER III, Indian Navy.

Parthasarthy Ramadurai, Engine Room Artificer III was the Chief Engine Room Artificer of a naval ship. The ship's propulsion and auxiliary machinery were maintained in the highest possible operational state, and this was mainly due to his dedication and professional competence. On two different occasions, he controlled the fires on board his ship in utter disregard to his personal safety. In April, 1974, his ship was assigned a special task. Despite rough seas and extremely difficult operating conditions, he was able to complete the task in time.

Engine Room Artificer Parthasarthy Ramadurai thus displayed professional competence and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Navy.

10. 52783 BRIJ MOHAN SHARMA, ENGINE ROOM ARTIFICER III, Indian Navy.

On the 10th June, 1974, when Brij Mohan Sharma, Engine Room Artificer, was on duty, in the Port Boiler room of a Naval Ship, an explosion was heard and steam was seen gushing out engulfing the entire boiler room at a very fast rate. When the noise subsided after some time it was discovered that a drain cock hole plug had blown out on auxiliary steam pipe. Sensing the danger to the lives of the personnel in the boiler room, Brij Mohan Sharma, who was nearest to port ladder rushed through the steam to the auxiliary stop valve at great personal risk and closed the valve which was at the top of the boiler and brought back the steam back under control.

In this action, Engine Room Artificer Brij Mohan Sharma displayed exemplary courage, professional skill and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Navy.

11. 48304 GURCHARAN SINGH DHILLON, REGULATING PETTY OFFICER, Indian Navy.

On 22nd January, 1974, a fire broke out in Port Blair in which extensive damage was caused to the Aberdeen Bazar, the main market of the town. On receiving the fire alarm Gurcharan Singh Dhillon, Regulating Petty Officer rushed to the Navy Office and volunteered to go with the first batch of fire fighters. On reaching the scene, he was assigned the task of demolishing a part of a building to create a fire breaker. With only a small number of sailors to assist and with improvised equipment, he accomplished the task in a very short time in utter disregard to his personal safety and thus helped to bring the fire under control quickly.

In this action, Regulating Petty Officer Gurcharan Singh Dhillon displayed great courage and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Navy.

12. 66819 DALIP SINGH CHATHA, PETTY OFFICER, Indian Navy.

On 22nd January, 1974, a fire broke out at Port Blair which caused extensive damage to the Aberdeen Bazar. On hearing the fire alarm, Petty Officer Dalip Singh Chatha, who was one of the first to rush to Navy Office, volunteered to go with the first batch of fire-fighters. At the scene of the fire, one of the shops containing a large number of drums of paint was in imminent danger of catching fire. Sensing the danger, Petty Officer Dalip Singh Chatha, in complete disregard to his personal safety, got the drums removed from the shop and thus stopped the fire from spreading.

In this action, Petty Officer Dalip Singh Chatha displayed courage and devotion to duty of a high order in the best traditions of the Navy.

No. 5-Pres./76.—The President is pleased to approve the award of the "SENA MEDAL"/"ARMY MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty and courage :—

1. Major YASH PAUL (IC 14821) Sikh Regiment.

Major Yash Paul was the Officer Commanding of a Company of an Infantry Battalion deployed in Nagaland. He was assigned the task of capturing a hostile who was camping in the area. He carried out necessary observations of the area of the hide out, and organised his company into three raiding parties and planned establishment of six stops. Apprehending that the hostile had come to know about the move, Major Yash Paul decided to launch the attack earlier than planned. The three groups of the raiding party moved in unison and spotted the hide out across a deep nallah.

While one of the groups of the raiding column was negotiating the nallah suddenly three hostiles ran out of the hut. The troops on the left flank opened fire on the fleeing hostiles, one of whom, on being wounded, jumped into the nallah in order to escape. Major Yash Paul along with an Other Rank pounced on this hostile and killed him. Other hostiles were chased away.

In this action Major Yash Paul displayed courage and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Army.

2. Major PARMANAND SHARMA (IC 20654) Engineers.

While employed as the Officer-in-Charge of a task force of an Engineer Regiment, Major Parmanand Sharma was assigned a work of a very important nature. He led the task force and worked ceaselessly with zeal, perseverance and tenacity. By his sustained hard work and determination, he accomplished the task well within the time schedule.

Major Parmanand Sharma thus displayed courage and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Army.

3. Captain ARUN KUMAR CHETTRI (IC 26333) Gorkha Rifles.

On the 18th July 1974, Captain Arun Kumar Chettri was given charge of Rifle Company of the Gorkha Rifles and was ordered to locate and raid a camp of hostiles. He divided the company into three groups and led one of them personally. After searching a few huts, he apprehended a hostile leader, who, on interrogation, gave out the location of the camp. Without waiting for the remainder of his company to concentrate, he with only two sections, proceeded to the suspected area. The task became hazardous due to bad weather and limited visibility, so much so that the hostile camp could not be sent from a distance of even 200 yards. At this point the hostile opened fire all of a sudden. A section of the troops charged forward firing their guns, while Captain Chettri and his section established a stop, lest the hostiles should escape. He opened fire on an escaping figure which unnerved other hostiles, who surrendered ultimately. All the hostiles were eventually captured alive with their arms, ammunition and valuable documents.

In this action Captain Arun Kumar Chettri displayed courage and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Army.

4. Shri MOHINDER KUMAR SINGHA,
Assistant Commandant,
Assam Rifles.

Assistant Commandant Mohinder Kumar Singha was in command of 'C' Wing of a Battalion of Assam Rifles in Champhai since July 1972. During his command, he displayed high sense of devotion to duty, diligence, perseverance and tact in handling local population. He gained the confidence of the people and organised a number of operations thereby achieving full control and domination of the area under his command. On 16th April, 1974, his courageous and quick action with only four men led to the capture of one sten machine carbine and one bretta gun. Again on 14th May, 1974, in another action he recovered two .303 rifles and a substantial quantity of ammunition alongwith photographs and documents.

Assistant Commandant Mohinder Kumar Singha throughout displayed courage and exceptional devotion to duty.

5. Shri UTTAM PADERA,
Assistant Commandant,
Assam Rifles.

During operations in Mokokchung District in Nagaland, Assistant Commandant Uttam Padera was commanding a column of Assam Rifles, which was given the task of locating and destroying a hostile camp. With one JCO and 35 Other Ranks he reached the area of Operation on 31st August, 1973. He divided the column into three sub columns for a three pronged advance for search, himself commanding one of these sub-columns. While the search of the various kheti huts and the ridges around was in progress, he discovered two men inside one such kheti hut. On being challenged, one of them jumped out and tried to escape. He chased the hostile and ordered an OR to open fire. This had a deterrent effect and the hostile surrendered. On interrogation the hostile at last agreed to lead the column to the two hide outs of the hostiles. This resulted in the capture of some important personnel of the set up of the undergrounds along with arms, ammunition and valuable documents.

In this action, Assistant Commandant Uttam Padera displayed exemplary courage and exceptional devotion to duty.

6. JC 30479 Subedar DHARAMPAL
Rajputana Rifles.

On receipt of information about the movement of a gang of hostiles on 15th August, 1973, Subedar Dharampal was detailed to lead a party for capturing the hostiles. The raiding party reached the place, where the hostiles were expected to cross a river, after a march of six hours through thick jungle. They laid ambush and remained there for one day without spotting the hostile gang. The next day they were informed that the hostile party had crossed the river at a different place and were resting in a hide out. Subedar Dharampal acted with foresight and imagination and leaving a stop behind, crossed the flooded river along with his column. In order to take the hostiles by surprise, he quietly laid a siege of the hide out, and taking a rifleman with him, crawled towards the hostile sentry. Other members of the raiding party also closed up slowly as instructed. Unmindful of the danger. Subedar Dharampal attacked the sentry with a lightening speed and over-powered him. Other hostiles were surrounded by other members of the raiding column. In the meantime one of the hostiles, who was carrying a weapon, jumped into nearby steep nallah and made a desperate effort to escape. Subedar Dharampal jumped in the nallah in his pursuit followed by two riflemen. He laid a siege of the place and combed the area till midnight inspite of heavy downpour and the jungle infested with leeches and snakes. As anticipated, the hostile came out in the morning and tried to escape. Subedar Dharampal who had already seen him, started crawling towards him un-noticed. In a dare devil act, he pounced on him and captured him alongwith his weapon. This ultimately led to the capture of four other hostiles, together with arms and ammunition.

In this action, Subedar Dharampal displayed exemplary courage and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Army.

7. JC 25556 Subedar MOHINDER SINGH,
Mahar Regiment.

Subedar Mohinder Singh was commanding a platoon of an Infantry Battalion, which was assigned the task of capturing the hostiles reported to be camping in his area. On the 10th May, 1974, he planned his operation and divided the platoon into two searching parties, one of which was led by himself. The parties set off under cover of darkness and commenced the search. After seven hours the leading scout of his party located a hut with three hostiles in it. Subedar Mohinder Singh quickly set off with three Other Ranks to block the only escape route, leaving the rest of the party there to give them a fire cover. Soon the hostiles opened fire in his direction. Subedar Mohinder Singh rushed towards the hut and came up to a steep cutting, about seventeen feet high, below which was the hut. Unmindful of the danger to his life, he give a war cry and jumped landing over the two escaping hostiles. The third hostile was firing towards him. Subedar Mohinder Singh exhorted one of his comrades, who also jumped behind him to charge and capture the fleeing hostile. The two other hostiles were completely unnerved and surrendered while the third one was also captured alive. Besides, a large quantity of arms, ammunition and valuable documents were captured.

In this action, Subedar Mohinder Singh displayed exemplary courage and exceptional devotion to duty.

8. JC 44542 Subedar YOGESHWAR PRASAD,
Engineers.

While employed as the Second-in-Command of a task force of an Engineer Regiment, Subedar Yogeshwar Prasad was assigned the task of a very important nature. He personally led the task force and worked ceaselessly with zeal, perseverance and tenacity. Due to his sustained hard work, resourcefulness and diligence, he accomplished the task well within the prescribed time limit.

Throughout, Subedar Yogeshwar Prasad displayed courage and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Army.

9. JC 71505 Naib Subedar GURDAS RAM,
Mahar Regiment.

Naib Subedar Gurdas Ram was commanding a platoon of an Infantry Battalion in Nagaland, which was given the task of locating and destroying the hide outs of the hostiles. He organised his platoon into groups and planned the search. On the 8th May, 1974, in the process of search, the leading scout detected two civilians sitting in a kheti hut. Naib Subedar Gurdas Ram rushed forward and soon noticed the persons running away, which confirmed the doubt of their being the hostiles. He ordered his men to chase one of them and himself dashed towards the other. In his chase down hill, Naib Subedar Gurdas Ram came across a sheer drop of about 25 feet. Unmindful of the danger, he jumped and continued chasing the hostile. When the distance between the two had reduced to about 70 yards and he could see him clearly, Naib Subedar Gurdas Ram fired two bursts from his sten on the escaping suspect from his hip position. The hostile fell lifeless.

In this action, Naib Subedar Gurdas Ram displayed exemplary courage and exceptional devotion to duty in the highest traditions of the Army.

10. JC 61939 Naib Subedar BINDHOJ LIMBU,
Assam Rifles.

On the 28th April, 1974, information was received that some hostiles with weapons were hiding in an area in village Maite in Mizoram. Naib Subedar Bindhoj Limbu immediately collected two sections and set off for the area. After a long march of seventeen miles, he arrived at the village and commenced screening. Though short of men, he ensured that all exits were sealed and no one was allowed to escape. By his perseverance and tenacity, he was able to elicit information about the weapons from the villagers and ultimately succeeded in his efforts and recovered some arms on the 2nd May, 1974.

In this action, Naib Subedar Bindhoj Limbu displayed exemplary courage, determination and exceptional devotion to duty in the highest traditions of the Army.

11. 9092571 Battalion Havildar Major ONKAR SINGH, Jammu and Kashmir Militia.

On the 11th June, 1973, a battalion of Jammu and Kashmir Militia was ordered to breach Pakistani mines in front of Pimple, a dominating point ahead of one of our pickets, so as to establish an observation post on the Bump. No engineers were, however, available with the unit for this task. Battalion Havildar Major Onkar Singh who had done Field Engineer Course, volunteered for the work and undertook the task with two Other Ranks. Disregarding all threats and danger from the enemy, Havildar Major Onkar Singh and his men not only cleared the entire bump of the mines but also established an observation post there. In the process, one of his jawans was injured by a mine blast. He tore off his pagri to use the piece as a bandage and brought the casualty on his back to a safe place. After completion of this task he and the other jawan concentrated on left spur of Pimple which was also covered by enemy mines. They succeeded in clearing the whole area of the mines.

In this action, Battalion Havildar Major Onkar Singh displayed exemplary courage, determination and exceptional devotion to duty in the highest traditions of the Army.

12. 3345206 Havildar BALDEV SINGH, Sikh Regiment.

On the 11th July, 1974, on receiving information that a hostile leader was camping in an area in Nagaland, a raid was planned. Havildar Baldev Singh was commanding the leading section of the party organised to apprehend the hostile leader. The party was divided into three groups and it approached the camping site of the hostile through difficult and circuitous routes. A man was seen running out of the camp. The party commander opened fire on the person. Havildar Baldev Singh led the charge, with complete disregard to his personal safety and killed the hostile leader.

In this action, Havildar Baldev Singh displayed courage and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Indian Army.

13. 3350507 Havildar NIRANJAN SINGH, Sikh Regiment.

On the 20th June, 1971, information was received at the High Altitude Warfare School that a troop carrying convey vehicles had fallen over the precipice into a chasm near Zojila. A rescue party of one officer and 8 instructors of the High Altitude Warfare School immediately set out for the site where the accident occurred. Despite bad weather, icy winds and restricted visibility the rescue party reached the site of the accident when it was completely dark. They were told that there was only one live casualty down below. The party decided to make every possible effort to rescue him. The quickest route to reach the casualty was by a direct descent of over 500 feet over precipitous and dangerous scree covered terrain.

Havildar Niranjan Singh, with complete disregard to his personal safety, volunteered to go down. A rope was anchored, and with cool courage, he began the dangerous descent along an almost vertical slope. On reaching the casualty, he surmised correctly that speed was of paramount importance as the condition of the casualty was deteriorating rapidly. Within 15 minutes under the constant danger of falling stones, he had the casualty properly tied to the stretcher. Two repelling ropes were attached to the stretcher and then began the most dangerous part of the mission. Very gradually the stretcher was lifted and moved upwards. He managed to bring the stretcher up to the last pitch where the stretcher had to be pulled over a 90 degree retaining wall. Half way up, the stretcher got stuck. Havildar Niranjan Singh hauled himself up to the stretcher and holding the rope between his teeth worked the stretcher loose at great personal risk. The following morning he again returned to participate in the dangerous mission of recovering the dead bodies.

In this action, Havildar Niranjan Singh displayed courage and exceptional devotion to duty in keeping with the best traditions of the Indian Army.

14. 2853685 Naik MADHO SINGH, Rajputana Rifles.

On the night of the 16th October, 1973, a company column of an Infantry Battalion was assigned the task of raiding a camp of the hostiles. Naik Madho Singh was a member of this party, leading one of the sections. The party reached the area of the hide out after a march of 12 hours through cross country mountainous terrain. The Column Commander divided the troops into four parties and planned simultaneous attack by two of the parties. Naik Madho Singh was with one of the attacking parties. The last 500 yards distance up to the camp was very steep and covered with thick growth. Naik Madho Singh, managed to reach near the hide out close to the sentry. Without losing time, he pounced on the sentry, snatched his rifle and caught him. In the meantime, other hostiles fled the camp leaving behind arms and ammunition.

In this action, Naik Madho Singh displayed courage and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Army.

15. 1423474 Naik KUNWAR PAL SINGH, Engineers.

While employed with an Engineer Regiment Naik Kunwar Pal Singh was assigned the task of a very important nature. He personally led the team of the Task Force and worked ceaselessly with zeal, perseverance and tenacity. With a high sense of purpose, resourcefulness and diligence, he put in sustained efforts to accomplish the task well within the time schedule.

In this action, Naik Kunwar Pal Singh displayed exemplary courage and exceptional devotion to duty in the highest traditions of the Army.

16. 9204792 Naik AMARJIT SINGH, Mahar Regiment.

Naik Amarjit Singh was a member of an ambush party of an Infantry Battalion which was given the task of blocking an expected exit route of the hostiles during an operation launched on 2nd September 1974 in the area west of Yorabami in Phek District. When the party came under effective automatic fire from the hostiles, Naik Amarjit Singh who was in the lead, instantaneously charged the hostiles with his sten gun. Unnerved by this attack, the hostiles started running into the jungle. While Naik Amarjit Singh closed in to the position from where the hostiles were firing, he came under fire from his left. Undeterred, he again charged towards the hostiles firing from his sten gun. This timely and courageous action resulted in the capture of a hostile along with arms and ammunition.

In this action, Naik Amarjit Singh displayed courage and exceptional devotion to duty in keeping with the best traditions of the Army.

17. 131812 Naik KHIM KHOLET KUKI, Assam Rifles.

On receipt of information about the presence of some hostiles near village Longching, a column of Assam Rifles was given the task of searching and raiding the hideout of hostiles. The column set out from their post on the 8th September, 1973, and reached the outskirts of village Changlang before dawn. The exact location of the hostiles was not known, but it was suspected that they were hiding in one of the kheti huts. The column was divided into three sections. The main column consisting of two sections was to fan out and search, while descending the slope of the hill. Naik Khim Kholet Kuki led one of these sections. It was noticed that some smoke was emitting from one of the kheti huts on the slope downhill. Soon afterwards, three hostiles were seen running out of the hut trying to escape downhill. Naik Kuki spotted them and shouted at them to stop and surrender. At this the hostiles turned and fired and fled west wards downhill. Naik Kuki urged his section to chase the hostiles. Regardless of personal safety he led the chase and killed one of the fleeing hostiles, with his sten gun. The successful action by the column led to the elimination of the notorious underground leader and two other hostiles and the capture of three weapons and several rounds of ammunition.

In this action, Naik Khim Kholet Kuki displayed courage and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Army.

18. 142096 Lance Naik MAHABIR PRASAD, Assam Rifles.

On the 20th July, 1973, a special patrol party consisting of 15 Other Ranks, led by a Junior Commissioned Officer of a battalion of Assam Rifles, was assigned the task of capturing some hostiles, who were operating in Phek village of Nagaland, in connection with collection of funds and forcible recruitment to the hostile ranks. Lance Naik Mahabir Prasad who was leading a scout party left the post to counter the movements of the hostiles. When the party reached the vicinity of the house, where the hostiles were hiding, they were fired upon. Lance Naik Mahabir Prasad, unmindful of the strength of the hostiles, immediately returned the fire. With grim determination and exemplary grit, he charged at the house. Firing from the hip position he killed two hostiles and severely injured two others. Though he himself sustained bullet injuries in his arm and thigh, he single handedly overpowered the gang of the hostiles.

In this action, Lance Naik Mahabir Prasad displayed exemplary courage and exceptional devotion to duty in the highest traditions of the Army.

19. 5838180 Rifleman DIL BAHADUR CHHETRI, Gorkha Rifles.

Rifleman Dil Bahadur Chhetri was a member of a patrol party detailed to raid a hostiles' camp located in a thick forest in Nagaland, which was guarded by an armed sentry. He was selected as a leading scout of the party deployed to silence the sentry guarding the hide out. The task was full of risk and involved hazardous crawl along the only track through the thick forest over a steep gradient. He led his team to the position most carefully, when he suddenly found himself face to face with the sentry, who had already cocked his rifle, ready to fire from behind, a stone sangar. He immediately leapt upon the hostile sentry and simultaneously opened fire. The sentry was killed but the other hostiles in the camp opened up intensive fire. Undeterred he charged forward with the party and caused utter confusion in the hostiles camp. Several hostiles were killed in the raid and large quantities of ammunition and other stores were recovered.

In this action, Rifleman Dil Bahadur Chhetri displayed exemplary courage and exceptional devotion to duty in the higest traditions of the Army.

20. 4045669 Rifleman SHIB SINGH NEGI, Garhwal Rifles.

On the 26th April 1974, Rifleman Shib Singh Negi was detailed to proceed on a Joint Army-Border Security Force patrol along the line of Actual Control in the Western Sector. When the party was proceeding towards one of our own posts, the enemy suddenly opened Light Machine Gun and Medium Machine Gun cross-fire, in which the patrol leader, a Border Security Force Sub Inspector was badly wounded. Being incapacitated, he lay trapped under the fire from the enemy guns. The patrol party, however, crawled to safety. Rifleman Shib Singh Negi realising the danger to the life of the patrol leader, dashed back to him, in utter disregard to his personal safety, and placing the casualty on his back, crawled up to the place where the rest of our troops had taken position.

In this action, Rifleman Shib Singh Negi displayed exceptional courage and devotion to duty of very high order in the best traditions of the Army.

21. 142001 Rifleman PUKH BAHADUR, Assam Rifles.

Rifleman Pukh Bahadur was deployed as Light Machine Gun number one of a patrol party of Assam Rifles, which was on duty in a post in Nagaland. On the 22nd June, 1973, a group of hostiles was noticed moving into the area. Appreciating the situation, the leader of the patrol party, ordered his Light Machine Gun group to give covering fire so that the rest of the party could launch an assault on the hostiles. This move was noticed by the hostiles, who opened fire with their automatic weapons. In order to avoid any loss to the patrol party, Rifleman Pukh Bahadur ordered the Light Machine Gun group to rush towards the hostiles and he himself led the fire. This determined effort unnerved the hostiles and forced them to run. Rifleman Pukh Bahadur gave them hot chase down the hill. In the process, one hostile was killed and another was wounded, who also succumbed to injuries later. Subsequently, it was also revealed that two more hostiles were injured in the operation.

In this action, Rifleman Pukh Bahadur displayed courage and exceptional devotion to duty.

22. 150697 Rifleman KHARKA BAHADUR CHHETRY, Assam Rifles.

On the night of the 18th/19th April, 1973, Rifleman Kharka Bahadur Chhetry was working as the leading scout with a patrol party in Nagaland. The patrol was given the task of searching, locating and raiding a hostiles hide-out. Rifleman Chhetry guided the patrol to the suspected area through a difficult approach avoiding the likely places of hostile sentries. He along with the patrol leader and four men immediately charged the hideout without waiting for the remaining patrol to join them. Their prompt action surprised the hostiles who fled into the jungle under the cover of darkness. The bold and courageous action of Rifleman Chhetry resulted in the recovery of a big haul of arms and ammunition.

In this action, Rifleman Kharka Bahadur Chhetry displayed exceptional courage and devotion to duty.

23. 1450792 Sapper JAGTAR SINGH, 61 Engineer Regiment.

While employed with an Engineer Regiment, Sapper Jagtar Singh was assigned the task of a very important nature. He worked ceaselessly with zeal, preseveranco and tenacity. With dedication to duty, resourcefulness and diligence, he put in sustained efforts to accomplish the task within the time schedule.

Sapper Jagtar Singh thus displayed great courage and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Army.

24. 13818555 Sepoy (Driver) KESAVAN BALAKRISHNAN, *(Posthumous)* Army Service Corps.

Sepoy (Driver) Kesavan Balakrishnan was one of the drivers of an Army Service Corps Company, specially selected for winter stocking and conveyance of troops to Gurez Sector. On the 7th October, 1973, Sepoy Balakrishnan proceeded with his vehicle loaded with military stores and a Border Security Force Head Constable on co-drivers seat. Four other Border Security Force personnel were travelling in the vehicle. While negotiating a sharp bend, the steering of the vehicle got locked and the vehicle went slightly off road. Sepoy Balakrishnan applied brakes but as the ground was slippery due to snow-fall, the vehicle went sliding down towards the deep nalla. Realising the stark and imminent danger, he shouted for others to get off while he himself continued to make desperate attempts to control and save the vehicle. The passengers warned in time immediately jumped out for safety. The vehicle slid down the steep slope and had an almost vertical fall into the nalla. Sepoy Balakrishnan sustained severe injuries to which he later succumbed in the hospital. He, thus saved the lives of 5 Border Security Force co-passengers and did not forsake the vehicle to save his own life.

Sepoy Kesavan Balakrishnan displayed exemplary courage and exceptional devotion to duty in the best traditions of the Army.

K. BALACHANDRAN, Secy. to the President

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

New Delhi-110001, the 8th January 1976

No. U-13019/7(i)/75-ANL.—In further modification of the notification of the Government of India in the Ministry of Home Affairs No. U-13019/9(iii)/74-AND dated the 3rd Sept, 74, the President is pleased to direct that the figures and words "31st March, 75" occurring in the said Notification, modified to read as "31st Dec, 75" *vide* Notification No. U-13019/7(i)/75-ANL dated 2nd Sept, 75 of the Govern-

ment of India in the Ministry of Home Affairs, shall *now be read as* "31st March 1976".

No. U-13019/7(ii)/75-ANL.—In further modification of the Notification of the Government of India in the Ministry of Home Affairs No. U-13019/9(iv)/74-ANL dated the 3rd Sept. 74, the President is pleased to direct that the figures and word "31st March, 75" occurring in the said Notification, modified to read as "31st Dec, 75" vide Notification No. U-13019/7(ii)/75-ANL, dated 2nd Sept, 75 of the Government of India in the Ministry of Home Affairs, shall *now be read as* "31st March 1976".

KAILASH PRAKASH, Dy. Secy.

MINISTRY OF PETROLEUM AND CHEMICALS

New Delhi, the 24th November 1975

RESOLUTION

No. J-11011/8/72-PPD.—In partial modification of para 5(ii) of the Govt. of India, Ministry of Petroleum and Chemicals Resolution No. J-11011/8/72-PPD dated the 16th March, 1974 relating to the composition of Oil Prices Committee, the following amendment is hereby made :—

FOR : "Shri N. Krishnan, Officer on Special Duty, Department of Mines, New Delhi."

READ : "Shri N. Krishnan, Retired Chief Cost Account Officer, Ministry of Finance, Dep't. of Expenditure, New Delhi."

2. This will take effect from 1-4-1975.

M. RAMASWAMI, Jt. Secy.

MINISTRY OF AGRICULTURE & IRRIGATION

(DEPARTMENT OF AGRICULTURE)

New Delhi, the 29th December 1975

(FAMINE)

No. 15-2/74-SR II.—In pursuance of the provisions of the Bye-law 7 made under Rule 7 of the Rules for the Administration of the Indian People's Famine Trust, the Central Government are pleased to publish the audited accounts of receipts, disbursement and assets of the Indian People's Famine Trust for the period 1-7-73 to 30-6-74 and 1-7-74 to 30-6-75.

SCHEDULE I

Indian People's Famine Trust Statement showing details of accounts at the close of **30-6-74**

1.	Endowment fund in Govt. Securities vested in Treasurer, Charitable endowment West Bengal. .	Rs.	32,78,400·00
2.	Short term investment with the State Bank of India, New Delhi.	Rs.	50,000.00
3.	Cash in current account with the State Bank of India, New Delhi as on 30-6-74.	Rs.	1,48,677.05
	TOTAL	Rs.	34,77,077.05

SDP-13-8-74
(P. P. GANGADHARAN)
Honorary Secretary.

Checked & found correct

Sd/- 22-8-74
(P.N. JAIN)
Accountant General,
Central Revenue,
New Delhi.

SCHEDULE II

INDIAN PEOPLE'S FAMINE TRUST

Abstract Account of. Receipts & Disbursement during the period from 1-7-73 *to* 30-6-74

1.	Opening balance			1. Payment of grants to :—		
		Rs.				Rs.
	(Current Account)	70,452.40		(a) Assam		15,000
	(Fixed Deposit)	50,000.00	1,20,452·40	(b) Orissa.		10,000
						25,000
			Rs.			
2.	Interest on Endowment Fund of Rs.	32,78,400	98,352	2. Honorarium to S.A.S. Accountants		600
	Less fee recovered at source by the Treasurer, Charitable Endowment West Bengal	983·52	Rs. 97,368.48			
3.	Refund of unspent balance		Rs. 4,094.25	3. Closing balance:		
				(a) Short term deposit with the State Bank of India, New Delhi.		50,000.00
				(b) Cash at Bank		1,48,677.05
4.	Interest on short term deposits with the State Bank of India, New Delhi.		2,361·92			1,98,677.05
		Rs.	2,24,277.05		Rs.	2,24,277.05

Sd/- (P. P. GANGADHARAN)
Honorary Secretary. 13-8-74

Checked & found Correct

Sd/-(P. N. JAIN)
Accountat General, Central Revenues
New Delhi.

SCHEDULE I

INDIAN PEOPLE'S FAMINE TRUST

Statement showing details of account at the close of 30-6-75.

	Rs.
1. Endowment fund in Government Securities vested in Treasurer, Charitable Endowment, West Bengal.	32,78,400.00
2. Cash in current account with the State Bank of India, New Delhi, as on 30-6-75.	1,23,839.06
TOTAL	34,02,239.06

Checked and found correct

Sd/-
Accountant General,
Central Revenues,
New Delhi.

Sd/- 29-7-75
(P. P. GANGADHARAN)
Honorary Secretary

SCHEDULE II

INDIAN PEOPLE'S FAMINE TRUST

Abstract Account of Receipts & Disbursement during the period from 1-7-74 *to* 30-6-75

		Rs.			Rs.
1.	Opening balance			1. Payment of Grants to the Govt. of :	
	Current Account	1,48,677.05			
	Fixed Deposit	50,000.00			
			1,98,677.05	1. West Bengal	25,000.00
				2. M.P.	25,000.00
				3. U.P.	25,000.00
2.	Interest on Endowment fund of	32,78,400.00	98,352.00	4. Rajasthan	25,000.00
				5. Gujrat	25,000.00
	Less fee recoverable by Treasurer, Charitable Endowments West Bengal	983.52		6. Assam.	25,000.00
				7. Orissa.	25,000.00
			97,368.48		
3.	Refund of unspent balance		229.40		1,75,000.00
				Honorarium to S.A. S. Accountants	175.00
4.	Interest on short term deposits with State Bank of India, New Delhi.		2,739.13	3. Closing balance (Cash at Bank)	1,23,839.06
			2,99,014.06		2,99,014.06

Checked and found correct.

Sd/-*Accountant General*
Central Revenues,
New Delhi.

Sd/- 29-7-75
(P. P. GANGADHARAN)
Honorary Secretary.

CHANDRA PRAKASH, Dy. Secy.

MINISTRY OF ENERGY
(DEPARTMENT OF COAL)

New Delhi, the 5th January 1976

RESOLUTION

No. 55011/31/75-PIR.—The Government of India have decided to constitute a committee to examine the whole question of safety in the nationalised coal mines. The committee will consist of the following :

Chairman

1. Shri S. B. Lal,
Joint Secretary,
Ministry of Energy
(Department of Coal).

Members

2. Shri S. Das Gupta,
General Secretary,
Indian National Mine Workers' Federation.
3. Shri Chaturanan Mishra,
Bihar State Committee of
All India Trade Union Congress.
4. Shri D. Bandhyapadhyaya,
Joint Secretary, Ministry of Labour.
5. Lt. Gen. K. S. Gafewal,
Chairman, Coal India Ltd.
6. Shri H. B. Ghose,
Managing Director,
Central Mine Planning &
Design Institute.
7. Shri R. N. Sharma,
Vice-Chairman/Managing Director,
Bharat Coking Coal Ltd.
8. Shri C. Balram,
Managing Director,
Western Coalfields Ltd.
9. Shri B. L. Wadehra,
Managing Director,
Central Coalfields Ltd.
10. Shri Ramaiyajee Varma,
Managing Director,
Eastern Coalfields Ltd.
11. Shri B. N. Raman,
Chairman/Managing Director,
Singareni Collieries Company Ltd.
12. Shri S. Bagchi,
Director,
Central Mining Research Station.

Member-Secretary.

13. Shri K. Sitaraman,
Director,
Ministry of Energy,
(Department of Coal).

2. The terms of reference of the committee will be as follows :

(1) To review all cases of coal mines where operations are being carried out under areas which are water-logged and having fires, examine whether adequate safety measures have been adopted and suggest, where necessary, steps that should be taken to make the mining completely safe;

(2) To analyse the causes of accidents in coal mines and consider the adequacy of the measures adopted by the mining organisations to remove those causes and prevent recurrence of the accidents;

(3) To review the existing arrangements for safety and rescue and recovery operations in coal mines; and

(4) To recommend steps that should be taken to improve safety consciousness and arrangements for safety and rescue and recovery operations in the nationalised coal mines.

3. The committee should submit its report to the Government as early as possible and not later than 30th April, 1976.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all the Ministries and Departments of the Government of India, President's Secretariat, Prime Minister's Sectt., Cabinet Secretariat, Lok Sabha/Rajya Sabha Secretariat, State Governments and all Members of the Committee.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

K. S. R. CHARI, Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1976